नासिकेत



गाना सुनते हैं
पुण्यवान्
पुण्यवान्
जीमते हैं
वैशंपायनऋषि
जन्मेजयराजा
यम दूत
यमदूत
यमदूत
पापी
यमदूत
पापी

और बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ ! आपको आगमन अच्छो भयो आसनपर बैठिये और हे महाराज ! तपोधन जा वार्त्ताके लिये आपको आवनो भयोहै ताहि कहिये ॥ १० ॥ उद्दालकके या वचनको सुनिके पिप्पलाद मुनि उनसों बोलत भये ॥ ११ ॥ हे मुनिनमें श्रेष्ठ ! आप मेरो प्यारो वचन सुनिये. हे

स्वागतंमुनिशार्दूलविष्टरेचोपविश्यताम् ॥ यदर्थमिहचायातस्तद्वदस्वतपोधन ॥ ॥ १० ॥उद्दालकवचः श्रुत्वापिप्पलादस्तमब्रवीत् ॥ ११ ॥ श्रूयतांमुनिशार्दूलम मवाक्यंचसूनृतम् ॥ अहोतपोमहत्तीव्रंत्वयातप्तंविदांवर ॥ १२ ॥ परंवनितयाहीनं संयमेनह्युपास्थितः ॥ तवपार्श्वेसपत्नीकाऋषयस्तपसिस्थिताः ॥ सपुत्राःसन्तिभो ब्रह्मन्पुत्रहीनस्त्वमेवच ॥ १३ ॥

विद्वान्नम श्रेष्ठ ! तुमने बडो तीव्र तप कियो है ॥ १२ ॥ परंतु वनिता जो स्त्री है ता करि हीन जे आप है तिनके समीप संयमसो आये हैं और तुम्हारे समीप स्त्रीसमेत ऋषि तपमें स्थित हैं और

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः श्रीगुरुभ्योनमः ॥ अथ नासिकेतोपाख्यानभाषा टीकाप्रारंभः । श्रीकेशवं केशवसंज्ञको विनत्वा रमालालितपादपद्मम् ॥ परांकुशाख्यं पितरं च नत्वा श्रीनासिकेतस्य करोमि भाषाम् ॥ १ ॥ दोहा—नमस्कार नारायणहि, कारि नरोत्तमहि

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथनासिकेतोपाख्यानप्रारम्भः ॥ नारायणंनमस्कृत्यनरंचैव नरोत्तमम् ॥ देवींसरस्वतींव्यासंततोजयमुदीरयेत् ॥ १ ॥ सूतउवाच ॥ गङ्गा तीरेसुखासीनःकृतस्नानोह्यलंकृतः ॥ दानंदत्त्वाचविधिवद्द्विजेभ्योजनमेजयः ॥२॥

नौमि ॥ बंदि गिरा व्यासहि रचत, भाषाटीका सौमि ॥ १ ॥ सूतजी बोले ॥ कि, गंगाके तीरमें सुखसों बैठ भये और स्नान करिकै अलंकार जे गहने आदि हैं तिन करिकै शोभित राजा जनमेजय विधिपूर्वक ब्राह्मणनको दान देकै वैशंपायनसों बोलत भये ॥ २ ॥

वे सबरे पुत्रन समेत हैं हे ब्रह्मन्! तुमही पुत्रहीन हो ॥ १३ ॥ जाके पुत्र नहीं है वाको घर सूनो है और परलोकहूमें वाकी गति नहीं होय हैं ताते सबरे जतननसों मनुष्यको पुत्र उत्पन्न करनो चाहिये ॥ १४ ॥ उद्दालक बोले ॥ कि हे मुनिनमें श्रेष्ठ पिप्पलाद! मोको ब्रह्मचर्यमें रहकर तप

अपुत्रस्यगृहंशून्यंपरलोकेगतिर्नहि ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपुत्रमुत्पादयेन्नरः ॥ १४ ॥
॥ उद्दालकउवाच ॥ ॥ षडशीतिसहस्राणिव्यतीतावत्सराश्रमे ॥ पिप्पलाद मुनिश्रेष्ठब्रह्मचर्ययुतस्यवै ॥ १५ ॥ पिप्पलादउवाच ॥ कायेनमनसावाचानारीणां परिवर्जनम् ॥ ऋतुसेवांविनास्वस्यब्रह्मचर्यंतदुच्यते ॥ १६ ॥ ऋतुकालाभिगम नंवंशस्यैवतुकारणम् ॥ नतेषांपापमस्तीतिपुरास्वायम्भुवोऽब्रवीत् ॥ १७ ॥

करते भये छ्यासी हजार वर्ष बीत चुके हैं ॥ १५ ॥ पिप्पलाद बोले ॥ कि कायासों मनसों और वचनसों नारीनको त्यागही है परंतु ऋतुधर्मके विना अपनी स्त्रीमें जो नहीं गमन करनो है वही ब्रह्मचर्य कहो जाय है ॥ १६ ॥ और ऋतुकालमें गमन करनो वंशके चलनेको कारण है जो या

प्रकार गमन करैंहैं उनको दोष नहीं है यह पहले स्वायंभुवने कही है ॥ १७ ॥ उनसों या प्रकार कहिकै महामुनि पिप्पलाद उद्दालकको नमस्कार करि अपने आश्रमको जातभये ॥ १८ ॥ वैशंपायन बोले कि उद्दालक उस वचनको सुनिकै दुःखी हो अपने मनमें विचार करत भये कि

एवमुक्त्वाततस्तंवैपिप्पलादोमहामुनिः ॥ उद्दालकंनमस्कृत्यसमुनिः स्वाश्रमंययौ ॥१८॥ वैशम्पायनउवाच ॥ उद्दालकस्तुतच्छ्रुत्वादुःखसंततमानसः ॥ कयामिकन्यकांकस्माल्लप्स्यामीतिविचिन्तयन् ॥ १९ ॥ पुनरुक्तंतुयास्यामिप्रजापतिनिवेशनम् ॥ सप्रदास्यतिमेभार्यां श्रेष्ठांवंशधरांशुभाम् ॥ २० ॥ प्रास्थितः सचतत्रैवयत्रदेवःप्रजापतिः ॥ प्रजापतिंततोदृष्ट्वाप्रणम्यपुरतः स्थितः ॥ २१ ॥

कहां जाऊँ और कासों कन्या पाऊँ ऐसे चिंता करत भये ॥ १९ ॥ फिरि कहत भये कि, प्रजापतिके स्थानको जातो हों वे मोको श्रेष्ठ वंश चलावनहारी सुन्दर स्त्री देंगे ॥ २० ॥ और जहाँ प्रजापति देव स्थित हैं वहां जात भये और ता पीछे प्रजा-

पतिको देखि नमस्कार करिके उनके आगे स्थित होत भये ॥ २१ ॥ पीछे आये भये उन पुरुषनमें श्रेष्ठ उद्दालक मुनिसों परमेष्ठी यह वचन बोलत भये कि, हे मुनिनमें श्रेष्ठ तपोनिधि उद्दालक ! आपको आवनो अच्छो भयो ॥ २२ ॥ और जाके लिये आप यहाँ आये हो वा

तमागतंनरव्याघ्रंपरमेष्ठ्यब्रवीदिदम् ॥ स्वागतंमुनिशार्दूलउद्दालकतपोनिधे ॥
॥ २२ ॥ यदर्थमिहचायातः कारणंवद्दस्वनः॥प्रजापतिवचःश्रुत्वाऽब्रवीदुद्दालको
मुनिः॥ २३ ॥ संतानार्थमिहायातोभार्यार्थंचप्रजापते ॥ यथास्यान्ममपुत्रश्चकु
लीनावशुभावधूः ॥ २४ ॥

कारणको मोसों कहो तव प्रजापतिके या वचनको सुनिके उद्दालक मुनि बोलत भये ॥ २३ ॥ कि, हे प्रजापति ! संतानके लिये और भार्याके लिये मैं यहाँ आयो हों जैसे मेरे पुत्र होय और कुलीन सुन्दर वधू मिलै हे प्रजापति महाराज ! आप ऐसो उपाय करिये हे प्रभु ! आप

जगत्के उत्पन्न करनेहारे हो ॥ २४ ॥ ब्रह्मा बोले कि, पहले तुम्हारे पुत्र होयगो ता पीछे भार्या होयगी और तुम्हारे वंशको बढावनहारो पुत्र होयगो ॥ २५ ॥ और सबरे लक्षणसों पूर्ण रघुवंशकी स्त्री मिलैगी वा करिके तुम्हारो वंश बढैगो यह मेरो वचन अन्यथा नहीं होयगो ॥ २६ ॥ हे उद्दालक महामुनि ! आप

तथात्वंकुरुमेतातस्रष्टासिजगतः प्रभो ॥ ब्रह्मोवाच ॥ प्रथमंतवपुत्रोवैपश्चाद्भार्या भविष्यति ॥ २५ ॥ भविष्यतिचतेपुत्रोयोसौवंशविवर्द्धनः ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णारघु वंशस्यसुन्दरी ॥२६॥ तयावर्द्धिष्यतेगोत्रंममवाक्यंनचान्यथा ॥ गच्छत्वमाश्रमे विप्रचोद्दालकमहामुने ॥ २७ ॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेउद्दालकचिन्तानाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अपने आश्रमको पधारिये ॥ २७ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्माद्विवेदिकृतायां-नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

वैशंपायन बोले ॥ या वचनको सुनिके ता पीछे उद्दालक मुनि अंतर्धान हो जात भये और अपने आश्रममें आयके मनमें यह चिंतवन करत भये ॥ १ ॥ कि मैंने भार्यासों पहले काहूके पुत्र न देख्यो है सुन्यो न है ब्रह्माने तो झूठीही कही मेरी हांसी कीन्ही है ॥ २ ॥ मेरे कैसे पुत्र

वैशम्पायनउवाच ॥ उद्दालकस्ततोवाक्यंश्रुत्वाप्यंतरधीयत ॥ स्वाश्रमेचागतस्त त्रमनस्येतदचिंतयत् ॥ १ ॥ भार्यायाः प्रथमंपुत्रः श्रुतोदृष्टोनकस्यचित् ॥ ब्रह्मणा तुमृषैवोक्तंपारिहास्यंकृतंमम ॥ २ ॥ कथंममभवेत्पुत्रः कथंभार्यालभाम्यहम् ॥ इतिचिन्तयतस्तस्यमन्मथाकुलितस्यच ॥ ३ ॥ उद्दालकस्यचमुनेरेतः प्रस्खलितं तदा ॥ तद्वीर्यंपद्मपुटकेक्षिप्तंयत्नेनवैततः ॥ ४ ॥

होयगो और मैं कैसे भार्या पाऊंगो या प्रकार चिंता करते भये वे उद्दालकमुनि कामसों व्याकुल होत भये ॥ ३ ॥ और वा समय उनको वीर्य स्खलित होत भयो ता पीछे मुनीश्वर वा वीर्यको

कि तुम यां दोनाको ले आओ ॥ १२ ॥ वाकी आज्ञाते वे सखी वा कुशानसों लपेटे भये दोनाको लावत भईं तब वह राजकन्या वा दोनाको ले वाकी गंधको सूंघत भईं ॥ १३ ॥ फिरि चंद्रवतीने वा दोनाको गंगाकी धारमें डारि दीन्हो और वह वीर्य सूंघनेहीसों वाके नाभि-

तदाज्ञयातयानीतंपुटकंदर्भवेष्टितम् ॥ गृहीत्वाराजकन्यासाघ्रात्वासौगन्धिकंचत ॥ १३ ॥ क्षिप्तंप्रवाहेगंगायाश्चन्द्रवत्यातथापुनः ॥ आघ्रातमात्रंतद्वीर्यंप्रविष्टंनाभिमण्डले ॥ १४ ॥ स्नात्वाचप्रस्थितासातुसखीभिः परिवारिता ॥ प्रासादेस्वेच्छयापूर्वंक्रीडतिस्मयथासुखम् ॥ १५ ॥ अज्ञातगर्भस्तस्यासीच्चन्द्रवत्यास्तथाशृणु ॥ मासेतुप्रथमेतस्यामिलितंशुक्रशोणितम् ॥ १६ ॥

मंडलमें प्रविष्ट होजात भयो ॥ १४ ॥ और वह कन्या सखीन समेत स्नान कारिके वहांते चलत भईं और अपने महलमें आयके इच्छापूर्वक सुखसों क्रीडा करन लगी ॥ १५ ॥ और विना

जानो भयो गर्भ वा चंद्रवतीके भयो सो सुनौ पहले महीनामें वाका रुधर और वह
वीर्य मिलि जात भयो ॥ १६ ॥ और दूसरे महीनेमें वाके रोमनकी पांति दीखन लगी
और तीसरे महीनेके आवनेपै वाको शरीर बढन लगो ॥ १७ ॥ और ता पीछे चौथे माहमें

रोमराजितरंगश्चद्वितीयेमासिचाभवत् ॥ तृतीयेमासिसंप्राप्तेशरीरंविपुलायते ॥
॥ १७ ॥ चतुर्थेचततोमासेस्तनंकृष्णमुखंभवेत् ॥ पञ्चमेमासिसंप्राप्तेचोदरंव्यक्तमे
वच ॥ १८ ॥ संभूतमुदरंदीर्घमासेषष्ठेचसप्तमे ॥ दृष्ट्वाचाप्युदरंकन्याभ्रष्टतेजास्त
दाभवत् ॥ १९ ॥ उद्विग्नमानसाजातापतिताशोकसागरे ॥ रुदतींतांततोभीताःपप्र
च्छुःकन्यकाःकिल ॥ २० ॥

वाके स्तननके मुख श्याम रंगके होजातभये और पाँचमें महीनेके आवनेपै पेट दिखाई दैन
लगो ॥ १८ ॥ छठे तथा सातवें महीनेमें पेटको बढोभयो देख्यो तब वह कन्या तेजसों
रहित होजात भई ॥ १९ ॥ उद्विग्न कहिये घबराहटमें है मन जाको ऐसी होजात भई और

शोकसमुद्रमें परिगई तब रोती भई वा चन्द्रवतीसों वे कन्या भयभीत हो पूँछती भई ॥ २० ॥ हे देवी ! तू काहेको रोवै है या रोयवेके कारणको तू यथार्थ कहिदे तब सखीनके या वचनको सुनिकै रोवती भई यह वचन बोली ॥ २१ ॥ हे सखियो ! मैं या अद्भुत दुःखको कैसे कहौं

किमर्थंरोदिषिदेविकथयस्वयथातथम् ॥ सखीनांवचनंश्रुत्वारोदमानाब्रवीदिदम् ॥ २१ ॥ इदमप्यद्भुतंदुःखंप्रवक्ष्यामिकथंसखि ॥ अयुक्तमभवच्चालिरघुवंशस्यदूषणम् ॥ २२ ॥ सगर्भमुदरंपश्यतेनरोदिमिकिंकरि ॥ तस्यास्तद्वचनंश्रुत्वाविह्वलाभवत्तदा ॥ २३ ॥ तदातुकन्यकाःसर्वागताराज्ञीसमीपतः ॥ विज्ञापयंतिकन्यायाःकारणंमहदद्भुतम् ॥ २४ ॥

हे सखियो ! रघुवंशको यह अयोग्य दूषण लग्यो ॥ २२ ॥ हे किंकरी ! मैं अपने पेटको गर्भ समेत देखौंहौं ताते रोयरहीहैं वासमय वाके उन वचनको सुनिकै वह किंकरीहू व्याकुल हो जात भई ॥ २३ ॥ तब सब कन्या मिलिकै रानीके समीप जात भई और चन्द्रवतीकन्याके

आति अद्भुत कारणका कहत भई ॥ २४ ॥ हे रानी ! जो तुम हमको अभयदान करो तो
विस्मयमें परी भई हम सब आपकी कन्याको अद्भुत वृत्तांत कहैं ॥ २५ ॥ रानी बोली ॥ कि
हमने तुमको अभय दान कीन्हो तुम यथार्थ कहो वा रानीके या वचनको सुनिके वे कहनेको

मोराज्ञिकथयिष्यामः कन्यायावृत्तमद्भुतम् ॥ अभयंचेत्प्रदीयेतब्रूमःसर्वंसुविस्मि
ताः ॥ २५ ॥ राज्ञ्युवाच ॥ अभयंदत्तमस्माभिः कथयध्वंयथार्थतः ॥ इतितद्वचनं
श्रुत्वातावक्तुमुपचक्रमुः ॥ २६ ॥ कन्याऊचुः ॥ ॥ अत्यद्भुतंमहादेविनभूतंन
श्रुतंक्वचित् ॥ तच्छृणुत्वंविशालाक्षि कन्यायावृत्तमद्भुतम् ॥ २७ ॥ नदेवान
चगंधर्वानासुरानचराक्षसाः ॥ तस्यादृष्टिपथेदेविनराणांचैवकाकथा ॥ २८ ॥

आरंभ करत भई ॥ २६ ॥ कन्या बोली ॥ कि हे महादेवी ! यह अतिअद्भुत है न कहूं
ऐसो भयो न कहूं सुन्यो हे सुन्दरनेत्रवाली ! तुम वा कन्याके अद्भुत वृत्तांतको सुनो ॥ २७ ॥
हे देवी ! वाके दृष्टिमार्गमें न देवता न गंधर्व न असुर और न राक्षस आये हैं और मनुष्यकी

तौ बातही कहां है ॥ २८ ॥ ताहूपे वा कन्याके कुलको दूषण देनहारो गर्भभयो है या प्रकार उन कन्याको अद्भुत वचन सुनिकै ॥ २९ ॥ वह रानी दुःखसों भरिकै मूर्छित हो भूमिमें गिरती भई और कुछ देर पीछे चैतन्य हो उन कन्याको विसर्जन करत भई ॥ ३० ॥ तब रानी

तथापितस्यागर्भोभूद्दुहितुः कुलदूषणम् ॥ इतितासांकुमारीणांश्रुत्वावचनमद्भुतम् ॥
॥२९॥ साराज्ञीदुःखसंपन्नामूर्च्छितापातिताभुवि ॥ क्षणेनलब्धसंज्ञासाताःकन्याविस
सर्जह॥३०॥राज्ञःसमीपंसागत्वाराज्ञीवचनमब्रवीत् ॥ राज्ञ्युवाच ॥ शृणुष्वेदंमहारा
जकन्यावृत्तंमहाद्भुतम्॥३१॥पुंसःसंसर्गहीनायाः कन्यायागर्भसंभवः ॥ कुलस्यदू
षणंराजन्यशःकीर्तिविनाशकृत् ॥ रघुस्तद्वचनंश्रुत्वासकंपश्चाभवत्क्षणात् ॥ ३२ ॥

राजाके पास जायके वचन बोलत भई ॥ रानी बोली ॥ कि हे महाराज ! कन्याके महाअद्भुत वृत्तांत सुनिये ॥ ३१ ॥ पुरुषके संसर्गसों रहित कन्याके गर्भका संभव है हे राजा ! यह गर्भ

कुलको दूषण देनहारो और यश तथा कीर्तिको नाश करनहारो है तब रघु रानीके यह वचन सुनेक क्षणमात्र कंपयुक्त होतभयो ॥ ३२ ॥ ता पीछे राजा क्रोधितहोके कहत भयो कि, हाय पापिनी ! तैंने यह कहा कियो ऐसे कहिके लज्जित होके कन्याके त्याग करनेकी आज्ञाको देत भयो ॥ ३३ ॥ तब रोवतीभई

तत क्रुद्धो नृपः पापेहाकन्येकिमिदंकृतम् ॥ इत्युक्त्वाज्ञांददौराजाकन्यात्यागेतिलज्जितः ॥ ३३ ॥ रोदमानाचसाकन्याभृत्यैर्नीतावनंप्रति ॥ रथमारोपयित्वाचनिक्षिप्तानिर्जनेवने ॥ ३४ ॥ एकाकिनीवनेतस्मिन्व्याघ्रसिंहनिषेविते ॥ विह्वलाभयसंपन्नाकन्याकमललोचना ॥ ३५ ॥

वा कन्याको सेवक रथमें बैठाके वनको लेजात भये और लेके सूने बनमें छोडि देतभये ॥ ३४ ॥ और व्याघ्र सिंहोकरि सेवन करे गये वा वनमें कमलके समान हैं चंचल नेत्र जाके ऐसी अकेली वह कन्या भयसो भीत होके व्याकुल हो जात भई ॥ ३५ ॥

और ऊँचे स्वरसों रोय रोयके ऐसे कहत भई कि, हाय विधाता तुमने यह कहा कियो और झुंडते बिछडी भई हरिणीके समान चारों दिशानकी ओर देख रही हो ॥ ३६ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्माद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां चंद्रवतीपरित्यागोनामद्विती-

रुदंतीतारशब्देनहाविधेकिमिदंकृतम् ॥ वीक्षन्तीचदिशः सर्वा यूथभ्रष्टामृगीयथा
॥ ३६ ॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेचन्द्रवतीपरित्यागोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥२॥
ऋषिरुवाच ॥ कश्चित्तत्रसमायातः सत्यधर्मपरोमुनिः ॥ कंदमूलफलाकांक्षीतामप
श्यत्तुकन्यकाम् ॥ १ ॥ दृष्ट्वातांसुंदरींराजंस्तर्कयंश्चाग्रतः स्थितः ॥ दमयंती
भवेत्किंस्विच्चित्रलेखातिलोत्तमा ॥ २ ॥

योऽध्यायः ॥ २ ॥ ऋषि बोले ॥ सत्य धर्ममें पर अर्थात् सत्य धर्मही जिनको प्यारो है ऐसे कोई मुनि कंदमूल और फलनकी चाहनासे वहाँ आवतभये और वा कन्याको देखत भये ॥ १ ॥ हे राजन् । वा

सुंदरीका वहाँ देखिके अपने मनमे तर्कको करते हुए आगे ठाढे होत भये कि यह कहा दमयंती है अथवा चित्रलेखा है अथवा तिलोत्तमा नाम अप्सरा है ॥ २ ॥ उर्वशी है वा मेनका है वा अहल्या है अथवा रोहिणी है वा यक्षिणीहै कि गंधर्वी है, कि किन्नरी है कि, नागकन्या है ॥ ३ ॥ अथवा कोई श्रेष्ठ

उर्वशीमेनकावास्यादहल्यारोहिणीभवेत् ॥ यक्षिणीवापिगंधर्वीकिन्नरीनागकन्यका ॥ ३ ॥ राजकन्याथवाश्रेष्ठाचेतिविस्मयमागतः ॥ शोभतेवनमध्येतुविद्युल्लेखायथाघने ॥ ४ ॥ करौरागेणशोभंतौविधात्रारचितौशुभौ ॥ नाभिश्चदक्षिणावर्तात्रिवलीमध्यसंस्थिता ॥ ५ ॥ अत्यद्भुतंचतद्रूपंदृष्ट्वाप्रोवाचकन्यकाम् ॥ कात्वंकस्यासिरंभोरुकिमर्थंवनमागता ॥ ६ ॥

राजाकी कन्या है ऐसे विस्मयको प्राप्त होत भये यह वनके मध्यमें ऐसे शोभित है जैसे मेघनमें बिजली शोभित होय है ॥ ४ ॥ विधाता करिके रचेभये याके सुन्दर हाथ लाल रंगसों शोभायमान हैं और याकी नाभि दक्षिणावर्त्त त्रिवलीके मध्यमें शोभित है ॥ ५ ॥ वाको अति अद्भुत रूप

देखिकै वा कन्यासों बोलत भये, कि हे रंभोरु ! तू कौन है और कौनकी है बनमें काहेको आई है ॥ ६ ॥ ऋषिको यह वचन सुनिकै वह कन्या बोलत भई हे ऋषि महाराज ! कुलको दूषण लगावनेहारी जा मैं हौं तासों आप काहेको पूछैं हैं न तौ मैं सुरी हौं न गंधर्वी हौं न आसुरी हौं

ऋषेस्तुवचनंश्रुत्वाकन्योवाचऋषिंप्रति ॥ किमर्थंपृच्छसेविप्रमामत्रकुलदूषणाम् ॥ नाहंसुरीनगंधर्वीनासुरीनचाकिन्नरी ॥ ७ ॥ रघोस्तुदुहिताचाहंपितामेगर्भदूषणात् ॥ त्यक्तवान्निर्जनेऽरण्येरघुर्मामत्रसुव्रत ॥ ८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ अद्यप्रभृतिमेपुत्रीधर्मतस्त्वंशुभानने ॥ गृहीत्वाताततः कन्यामृषिराश्रममागतः ॥ ९ ॥ अस्मिन्ममाश्रमेरम्येसुखंतिष्ठनृपात्मजे ॥ उदरंववृधेतस्यागर्भोमासोद्दिवसैः क्रमात् ॥ १० ॥

और न किन्नरी हौं ॥ ७ ॥ मैं रघुराजाकी पुत्री हौं मेरे पिताने मोको गर्भके दूषणसों या शून्य वनमें त्याग कियो है ॥ ८ ॥ ऋषि बोले ॥ हे सुंदर मुखवाली ! आजसों लगाके तू मेरी धर्मकी पुत्री है ता पीछे वा कन्याको लेकै ऋषि अपने आश्रमको आवत भये ॥ ९ ॥ और ऐसे

कहत भये कि, हे राजाकी पुत्री ! तू या मेरे आश्रममें सुखसों वास कर और दिननके बीतने पै क्रमसों वाके उदरमें गर्भ वृद्धिको प्राप्त होतभयो ॥ १० ॥ और नवमें महीनामें वाके प्रसूति भई और नासिकाके अग्रमें होकै वा कन्याके सब लक्षणनकारियुक्त पुरुष उत्पन्न होतभयो ॥ ११ ॥ ज्ञानवान् तथा

मासेतुनवमेतस्याः प्रसूतिरभवन्नृप ॥ नासाग्रेणतुकन्यायाः पुरुषःसर्वलक्षणः ॥
॥ ११ ॥ ज्ञानवान्बुद्धिसंपन्नो बालोसौविनयान्वितः ॥ एतादृशंपालयंतीदुःखा
तासमवर्तत ॥ एकदारण्यमध्येतंरुदंतंसानृपात्मजा ॥ १२ ॥ किमर्थंरोदिषित्वंमे
पापसम्पर्ककारक ॥ त्वदीयकारणेपुत्रह्यवस्थेयंममेदृशी ॥ १३॥

बुद्धि और विनय करिकै युक्त वा बालकको पालती भई वह चंद्रवती दुःखित होती भई तब वह राजपुत्री वनके मध्यमें रोवते भये वा बालकको कहत भई ॥ १२ ॥ कि मोको पाप लगावनहारो तू काहेको रोवे है हे पुत्र ! तेरेही कारणसों मेरी यह दशा भई है ॥ १३ ॥

वैशपायन बोले ॥ कि एक वर्ष पूरो होनेपै वा कन्याने एक मंजूषा बनवाई ॥ १४ ॥ और जतनसों लपेटे भये वा पुत्रको वा मंजूषामें स्थापित करिकै वा वनमें गंगाकी धारमें डारि देतभई ॥ १५ ॥ और वा कन्याने पुत्रके आगे यह वचन कह्यो कि, मैं नहीं जानों हौं कि तेरे या गर्भकी उत्पत्ति

॥ वैशम्पायनउवाच ॥ तयासंवत्सरेपूर्णेमंजूषांतत्रकारिताम् ॥ १४ ॥ तदाभ्यंतरतः पुत्रंयत्नेनपरीवेष्टितम् ॥ कृत्वातत्रवनोद्देशेगंगामध्येविनिक्षिपत् ॥ १५ ॥ तयावाक्यंचकथितंपुत्रस्याग्रेतुकन्यया॥ नजानामिकथंचिद्वैकुतस्तेगर्भसंभवः ॥ १६ ॥ येनतेगर्भसंभूतिर्येनजातोसिपुत्रक॥ तेनत्वंमिलयेः सम्यग्यद्यहंदोषवर्जिता॥ १७॥ वैशंपायनउवाच ॥ गतोप्रवाहेगङ्गायातरन्कन्यासुतस्तदा ॥ आगतश्चनदीतीरेयत्रतप्यंतिवाडवाः ॥ १८ ॥

कहांते भई ॥ १६ ॥ ताते हे पुत्र ! तू जाते उत्पन्न भयो है तासों तोको मिलाऊं हौं जो मैं सत्यही दोष करिकै वर्जित हौं ॥ १७ ॥ वैशंपायन बोले ॥ वा समय वह कन्याको पुत्र गंगाकी धारमें बहतो भयो जहां

ब्राह्मण तप करि रहे हैं वहाँ किनारेसों लागि जातभयो ॥ १८ ॥ उन ब्राह्मणके मध्यमें बडे योगी उद्दालक मुनि गंगाकी धारमें आई भई वा मंजूषाको देखत भये ॥ १९ ॥ वा बड़ी मंजूषामें शुभ हैं लक्षण जाके ऐसे और जैसो पहले कबहूं नहीं देखो ऐसे सुंदर पुत्रको देखिके विस्मयको प्राप्त होतभये ॥ २० ॥ तब

तेषांमध्येमहायोगीमुनिरुद्दालकस्तथा ॥ आगतंतंप्रवाहेणददर्शमुनिपुङ्गवः॥ १९॥
मञ्जूषायांचविन्यस्तंबालकंशुभलक्षणम् ॥ सुंदरादृष्टपूर्वंतुदृष्ट्वाविस्मयमागतः ॥
॥ २० ॥ ध्यानेनज्ञातवान् सर्वंस्ववीर्यप्रभवंसुतम् ॥ ज्ञात्वाथस्वाश्रमेबालं वास
यामासलालयन् ॥ २१ ॥

ध्यान करिके अपने वीर्यसों उत्पन्न भये पुत्रको जानत भये और जानिकै वा बालकको प्यारसों अपने आश्रममें राखत-भये ॥ २१ ॥

और वह बालक उद्दालक मुनिको पिता ऐसे कहतो और वहांही अति सुन्दर आश्रममें आनन्दसों सदा रमण करतो ॥ २२ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायांनासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायांपितुः पुत्रोपस्पर्शनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

पितोतिवदतेबालोमुनिमुद्दालकंप्रति ॥ तत्रैवरमतेनित्यमाश्रमेचातिशोभने ॥२२॥
इति श्रीनासिकेतोपाख्याने पितुः पुत्रोपस्पर्शनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ रघुवंशोद्भवाकन्यारुदन्तीशोकविह्वला ॥ पुत्रशोकेनसंतप्ता
गङ्गातीरेसमागता ॥ १ ॥ वीक्षन्तीच ततः पुत्रं क्रंदतीशोकविह्वला ॥ रुदन्तीसान
दीतीरेप्रयाताव्रतचारिणी ॥ २ ॥

वैशंपायन बोले ॥ रघुवंशमें उत्पन्न कन्या पुत्रके शोकसों व्याकुल हो रोती भई गंगाके तीरमें आवत भई ॥ १ ॥ ता पीछे पुत्रको देखती और पुकारतो शोकमें व्याकुल हो वह व्रत करनहारी

रोवती भई गंगाके तीरमें जात भई ॥ २ ॥ वाने वहां गंगाके तीरमें सुन्दर आश्रम यो और वा आश्रममें खेलते भये वा पुत्रको देखत भई ॥ ३ ॥ वा आश्रममें वाके मित्र जे बालक हैं उनके साथमें खेलते भये वा बालकसों मृगके बच्चेकेसे हैं नेत्र जाके और प्रसन्न है मुख जाको ऐसी वह कन्या पूछत

दृष्टश्चैवाश्रमोरम्योगङ्गातीरेसुशोभनः ॥ पश्यातिस्मसुतंतत्रक्रीडमानंतमाश्रमे
॥ ३ ॥ वयस्यैर्बालकैःसार्धंक्रीडमानंतमाश्रमे ॥ पप्रच्छमृगशावाक्षीबालकंमु
दितानना ॥४॥ कस्त्वदीयःपितापुत्रकस्यायंचाश्रमःशुभः ॥ किंनामतस्य विप्रस्य
पृच्छाम्येतद्वदस्वमे ॥ हर्षितंमेमनोभूरिदर्शनात्तवपुत्रक ॥ ५ ॥

भई ॥ ४ ॥ कि हे पुत्र ! तुम्हारो पिता कौन है और यह शुभ आश्रम कौनको है और जिनको यह आश्रम है उन मुनीश्वरको कहा नाम है यह मैं पूँछो हौं सो तुम मोसों कहौ हे पुत्रक ! तुम्हारे देखनेसों मेरो

को सुनिकै पुत्र पितासों फिरिकै बोलत भयो ॥ १४ ॥ हे पिता ! काम करिकै पीछे गंगास्नान-
को गई है तब मुनीश्वर उद्दालक प्रसन्न होके अग्निहोत्र करत भये ॥ १५ ॥ देवकार्य
और पितृकार्य करिकै पुत्रसों बोलत भये कि, हे पुत्र ! तुम मोको अपनी माताको दिखाओ ॥

कृत्वाकर्मततस्तातगङ्गास्नानार्थिनीगता ॥ संहृष्टोसावृषिस्तस्मिन्नग्निहोत्रंचका
रह ॥ १५ ॥ सकृत्वादेवकार्यंचपितृकार्यंतथैवच ॥ उवाचैनंवतःपुत्रंमातरंदर्श
यस्वमे ॥ १६ ॥ पुत्र उवाच ॥ आगच्छस्वाश्रमंमातराहारंतेददाम्यहम् ॥ पिताचै
वाश्रमंप्राप्तास्तिष्ठमातर्यथेच्छया ॥ १७ ॥ मातोवाच ॥ अयुक्तंतेवचःपुत्रश्रुतं
वैरोमहर्षणम् ॥ अधर्मयुक्तंवाक्यंतेनप्रशंसंतिधर्मवित् ॥ १८ ॥

॥ १६ ॥ पुत्र बोल्यो ॥ हे माता ! अपने आश्रमको आओ तुमको मैं भोजन देउँ पिताहु आश्रममें
आय गये हैं हे माता ! अपनी इच्छापूर्वक रहो ॥ १७ ॥ माता बोली ॥ हे पुत्र ! तेरो वचन अयोग्य

करावनहारो है और अधर्मयुक्त या तुम्हारे वचनकी धर्मके
हे और श्रवण करनेसों निश्चय रोमांच
जाननेहारे प्रशंसा नही करैं हैं ॥ १८ ॥ पिता अथवा भ्राता अथवा माता वा मामा लोकमें
कन्या देतेहैं और पुत्र माताका लोकमें दान नही करैं हैं ॥ १९ ॥ हे पुत्र! ताहूपै तुम जा स्थानमें

पितावाप्यथवाभ्रातामातावाप्यथमातुलः ॥ ददातिकन्यकांलोकेनपुत्रोमातरंददे
त् ॥ १९ ॥ तथापितत्रगच्छत्वंयत्रपूर्वंचतिष्ठति ॥ २० ॥ ततोनिवृत्तः संहृष्टस्तत्रैव
चवराश्रमे॥गतोसौपितृपार्श्वेतुमात्राप्रोक्तंतदब्रवीत् ॥ २१ ॥ एषामदीयाजननीपि
तात्वमृषिपुङ्गव ॥ उद्दालकउवाच ॥ युक्तंसावदतेवाक्यंपुत्रमेनिश्चयंशृणु ॥ २२ ॥

वाही श्रेष्ठ आश्रमको लौटकरि
पहले हे वहांई जाओ ॥ २० ॥ ता पीछे वह बालक प्रसन्न होके
आवत भयो और पिताके समीप जात भयो और माताको कह्यो भयो वचन पितासों कहत भयो
॥ २१ ॥ यह मेरी माताहै और हे ऋषिनमें श्रेष्ठ! आप मेरे पिता हैं ॥ उद्दालक बोले ॥ वह

तुम्हारी माता योग्य वचन कहैहै हे पुत्र मेरो निश्चय सुनों ॥ २२ ॥ हे पुत्र ! तुम मातासों पूछौ कि, तू कौनके वंशमें उत्पन्न है और मैं तेरो पुत्र कैसे भयो हौं और कैसे यहां आगमन कियो है ॥ ॥ २३ ॥ ऐसे न्यायपूर्वक कहो और सब यथार्थ पूँछो तब वह बालक पिताको वचन

मातरंपृच्छपुत्रत्वंकस्यवंशेसमुद्भवा ॥ पुत्रोहंतेकथंजातःकथमागमनंकृतम् ॥२३॥ एवंवदयथान्याय्यंसर्वंपृच्छयथार्थतः ॥ सपितुर्वचनंश्रुत्वागत्वापप्रच्छमातरम् ॥ ॥ २४ ॥ कथयस्वाम्बिकेसत्यंपितात्वांपृच्छतेऽधुना॥ कस्यवंशेसमुत्पन्नाकथंपुत्रो ह्यहंतव ॥ २५ ॥ कथमागमनंह्यत्रसत्यंब्रूहियथाविधि ॥ मातोवाच ॥ सत्यंशृणु महाप्राज्ञयन्मांत्वंपरिपृच्छसि ॥ २६ ॥

सुनिकै मातासों पूछत भयो ॥ २४ ॥ हे माता ! तू सत्य कह या समय पिता तोसों पूछे हैं कि तू कौनके वंशमें उत्पन्न है और मैं तेरो पुत्र कैसे हों ॥ २५ ॥ और यहां तेरो आवनो कैसे भयो सो सब तू विधिपूर्वक सत्य कह ॥ माता बोली ॥ कि, हे महाप्राज्ञ ! जो तू मोसों

पूछे है वाहि सत्य सुन ॥ २६ ॥ पहिले कर्मके अनुयोगसों जो विचेष्टित भयो है वाहि मैं
न्यायपूर्वक कहौंहों एकाग्रमन होके सुन ॥ २७ ॥ तीनों लोकनमें विख्यात रघुनामसों प्रसिद्ध
राजा होत भयो ताके वंशमें मैं पार्वतीके समान पुत्री उत्पन्न भई हौं ॥ २८ ॥ धवल घरमें अर्थात्

पूर्वकर्मानुयोगेनयच्चजातंविचेष्टितम् ॥ कथयामियथान्याय्यंशृणुष्वैकाग्रमान
सः ॥ २७ ॥ रघुर्नाम्नेतिविख्यातोराजात्रैलोक्यविश्रुतः ॥ तस्यवंशेसमुत्पन्नापुत्री
गिरिसुतायथा ॥ २८ ॥ धवलागारसंस्थाहंसखीभिः परिवेष्टिता ॥ कन्यादशसहस्रे
णरममाणासुखेनया ॥ २९ ॥ ऋतौवसन्तेसंप्राप्तेगङ्गातीरेसुपुष्पिते ॥ विज्ञापितास
खीभिश्चगङ्गास्नानार्थिनीगता ॥ ३० ॥

महलमें स्थित मैं दश हजार कन्यासों वेष्टित आनन्दसों विहार करती थी ॥ २९ ॥ एक बार
वसन्त ऋतुके आनेपै सुन्दर फूलनसे शोभायमान गंगाके तटमें सखिनकरिके प्रार्थना करी

गई मैं गङ्गास्नानको जातभई ॥ ॥ ३० ॥ वहां स्नान करती भई मैंने जलके ऊपर बहतो कुशानसों लपेट्यो भयो कमलके पातनको दोना देख्यो ॥ ३१ ॥ मैंने सखिनसों लेके वा दोनाको सूंघ्यो यामें वामेंते वीर्य मेरी नासिकामें चलो जात भयो ॥ ३२ ॥ हे विप्र ! तासों मेरे गर्भ होजात भयो यामें

तत्रस्नानंप्रकुर्वत्यामयादृष्टंजलोपरि ॥ संतरद्वेष्टितंदर्भैःपुटकंकमलस्यहि ॥ ३१ ॥ तद्गृहीत्वासखीहस्तादाघ्रातंकमलंमया ॥ तस्याभ्यंतरतोवीर्यंनासाभ्यंतरतोगतम् ॥ ३२ ॥ संभूतश्चततोविप्रममगर्भोनसंशयः ॥ सखीभिर्ज्ञापितोराजाकोपाविष्टस्ततोरघुः ॥ ३३ ॥ अज्ञातगर्भामांतातोवनेत्यांजनिर्जने ॥ रुदंतीसाह्यहंदृष्टा मुनिनातुफलार्थिना ॥ ३४ ॥

सन्देह नहीं है ता पीछे सखिनकरि जतायो गयो वह रघुराजा बहुतही क्रोधित होत भयो ॥ ३३ ॥ ता पीछे नहीं जानो है गर्भ जाने ऐसी मोको सूने वनमें पिताने छाड़ दियो तब रोवती मोको

फलनके लेबेको आये भये एक मुनि देखत भये ॥ ३४ ॥ और मेरे ऊपर दया करिके मोको अपने आश्रममें लावत भये तब उन मुनिके आश्रममें हे पुत्र ! तुम उत्पन्न भये ॥ ३५ ॥ जाते तुम मेरे बालक नासिकाते उत्पन्न भये ताते उन महात्माने नासिकेत यह नाम राख्यो ॥ ३६ ॥

ममोपरिकृपांकृत्वाह्यानीतास्वाश्रमंप्रति ॥ प्रसूताचाश्रमेतस्यभवाञ्जातोसिपुत्रक ॥ ३५ ॥ नासिकातःसमुत्पन्नोयतस्त्वंममबालकः ॥ नासिकेतेतितेज्ञात्वानामप्रोक्तंमहात्मना ॥ ३६ ॥ ततःसंस्थाप्यपेटायांनिक्षिप्तस्त्वंमयाजले ॥ पुनर्वियोगदुःखार्तावीक्षतीत्वांसमागता ॥ ३७ ॥ एतदेवमयाप्रोक्तमात्मीयस्थितिकारणम् ॥ ततोगत्वापितुः पार्श्वेनासिकेतोन्यवदेयत् ॥ ३८ ॥

ता पीछे मैंने तुमको मंजूषामें धारिके गङ्गाके जलमें छोड़ि दियो फिर तुम्हारे बिछुडनेसे दुःखी हो तुमको ढूंढतीभई यहां आई हौं ॥ ३७ ॥ यही मैंने अपनी स्थितिको कारण कह्यो ता पीछे नासि·

कुत पिताके समीप जायकै सब वृत्तांत कहतो भयो ॥ ३८ ॥ हे तात ! मेरी माताने जो न्यायके अनुसार कह्योहै ताहि सुनो रघुराजकी पुत्री मैं गङ्गास्नानके लिये आई ॥ ३९ ॥ कुशानसों लिपट्यो आये भये वा कमलके दोनाको और वामें धरभये वीर्यको देखि यह कहाहै ऐसे कहत

शृणुतातयथान्याय्यंमात्रात्वाभिहितंमम ॥ रघोराज्ञस्तुदुहितागङ्गास्नानार्थमागता ॥ ३९ ॥ आगतंपद्मपुटकंदर्भेणपरिवेष्टितम् ॥ दृष्ट्वापद्मगतंवीर्यंकिमेतदितिचाब्रवीत् ॥ ४० ॥ ततःसातत्समाघ्रायजलेचैवव्यसर्जयत् ॥ तस्मिन्नेवाघ्रातमात्रेजातंगर्भस्यधारणम् ॥४१॥ तच्छ्रुत्वाक्रोधमापन्नोराजारघुरुदारधीः ॥ तत्याजकन्यकांचैववनेसिंहादिसेवते ॥ ४२ ॥

भई ॥ ४० ॥ ता पीछे वह वाहि सूँघिकै जलमें छोड़ि देत भई वाके सूँघनेहीसों गर्भको धारण भयो ॥ ४१ ॥ सो सुनिकै उदारबुद्धि राजा रघु क्रोधित हो सिंह आदिकन करि सेवन करे गये

पनमें कन्याको छोडि देत भये ॥ ४२ ॥ याप्रकार अपनो सब वृत्तांत नासिकेतने कह्यो वाको वह वचन सुनिके ऋषि विस्मयको प्राप्त होत भये ॥ ४३ ॥ और कहत भये कि, हे प्रजापति ! तुम्हारे वचन सत्य भयो ऐसे कहिकै वे मुनि फिर वा पुत्रसों बोलत भये ॥ ४४ ॥ कि हे पुत्र ! तुम

एवंसर्वस्ववृत्तांतंनासिकेतेनभाषितम् ॥ तस्यतद्वचनंश्रुत्वाऋषिर्विस्मयमागतः ॥
॥ ४३ ॥ अहोप्रजापतेसत्यंसंभूतंवचनंतव ॥ इत्युक्त्वास्वगतंविप्रःपुनःपुत्रंसचाब्रवीत् ॥ ४४ ॥ तिष्ठपुत्रत्वमत्रैवमात्रासहतपोवने ॥ तस्याश्चार्थीगमिष्यामिरघोराज्ञश्चवेश्मनि ॥ ४५ ॥ एवमुक्त्वाततोविप्रःकन्यार्थीसमगच्छत ॥ क्रमेणैवततःप्राप्तः शुभंचरघुमंदिरम् ॥ ४६ ॥

अपनी मातासमेत इहां तपोवनमें रहो और वा तुम्हारी माताके लिये मैं रघुराजाके घर जाउँगो ॥ ४५ ॥ ऐसे कहिके वह विप्र कन्याकी चाहनासों चलत भयो तापीछे क्रमसों सुन्दर रघुके मंदिरमें प्राप्त होत

भयो ॥ ४६ ॥ वह राजा रघु जलते भये अग्निके समान आवते भये ब्राह्मणको देखि आसनते उठिकै अर्घ्यपाद्य आदिसों उनको पूजन करत भये ॥ ४७ ॥ राजा रघु उनकी प्रदक्षिणा करिकै मधुपर्कसों पूजन करत भये फिर सुखसों बैठभये उन मुनीश्वरसों वचन बोलत भये ॥ ४८ ॥

सदृष्ट्वाविप्रमायान्तंज्वलन्तमिवपावकम् ॥ उत्थायचार्घ्यपाद्याद्यैरर्चयच्चासनाद्रघुः ॥ ४७ ॥ कृत्वाप्रदक्षिणंचैवमधुपर्केणचार्चयत् ॥ सुखासीनंचविप्रर्षिंरघुर्वचनमब्रवीत् ॥ ४८ ॥ अद्यमेसफलंजन्मह्यद्यमेसफलाः क्रिया ॥ अद्यमेसफलंदानंयज्जातंतवदर्शनम् ॥ ४९ ॥ गवांशतसहस्रंमेहेमकोटिशतानिच ॥ तुरंगमादिसर्वंमेराज्यंतुभ्यंनिवेदितम् ॥ ५० ॥

आज मेरो जन्म सफल भयो और आज मेरी क्रिया सफल भई और आज मेरो दान सफल भयो जो आपको दर्शन भयो ॥ ४९ ॥ शत सहस्र कहिये एक लाख गौ और सौ करोड सुवर्ण और

घोडों आदि समेत सब राज्य आपको मैंने निवेदन कियो अर्थात् सब आपको भेंट कियो ॥ ५० ॥ उद्दालक बोले ॥ मैं घोडे आदि और सुवर्णके सौ करोड तथा राज्य नहीं चाहौंहौं एक कन्या मैं मांगों हों ॥ ५१ ॥ रघु बोले ॥ कि हे विप्र ! मैं तुमको राज्य देऊँहौं कन्या मेरे नहीं है पहले

उद्दालकउवाच ॥ ॥ नाहन्तुरङ्गमादीनिहेमकोटिशतानिच ॥ राज्यंनेच्छामिराजेन्द्रकन्यामेकामहंवृणे॥५१ ॥ ॥रघुरुवाच ॥ ॥ राज्यंददामितेविप्रकन्याऽममनविद्यते ॥ कन्यैकामेपुराह्यासीत्सामृतामुनिसत्तम ॥५२॥ उद्दालकउवाच ॥ नसामृतातुकन्यातेममतिष्ठतिचाश्रमे॥मह्यंतांदेहिराजेन्द्रसत्यधर्मपरायण॥५३॥रघुरुवाच॥ आश्रमेतुकथंकन्यात्वदीयेविप्रतिष्ठति॥ कौतूहलमिदंमन्येकथयस्वयथार्थतः॥५४॥

मेरे एक कन्या थी हे मुनिश्रेष्ठ ! वह मरिगई ॥ ५२ ॥ उद्दालक बोले ॥ वह तुम्हारी कन्या मरी नहीं है मेरे आश्रममें स्थित है हे सत्यधर्ममें तत्पर राजा ! तुम वा कन्याको हमें दान करो ॥ ५३ ॥ रघु बोले ॥ हे विप्र ! वह कन्या आपके आश्रममें कैसे स्थित है मैं याको बडो

कौतूहल मानो हौं हे विप्र! यथार्थ कहौ ॥ ५४ ॥ ऋषि बोले ॥ पहले प्रजापतिने मेरे लिये जो वचन कहो हो वह देवके संयोगसों पूरो भयो और वाको सुर तथा असुरहू निवारण नहीं करिसके हैं ॥ ५५ ॥ मैं वंशकी स्थितिके लिये पद्मभू जे ब्रह्मा हैं तिनके समीप गयो हो वहां

ऋषिरुवाच ॥ ॥ प्रजानांपतिनावाक्यंपुरायन्मेनियोजितम् ॥ निर्मितंदैवसंयोगा दुर्वारंतत्सुरासुरैः ॥ ५५ ॥ वंशस्थितेःकारणायगतोहंयत्रपद्मभूः ॥ गत्वातत्रमया राजन्भार्यावंशविवर्द्धिनी ॥५६ ॥ प्रार्थिताराजशार्दूलसूर्यवंशसमुद्भवा ॥ तेनोक्तं प्रथमंपुत्रः पश्चाद्भार्याभविष्यति ॥ ५७ ॥ तवभार्याचविप्रेन्द्ररघुवंशसमुद्भवा ॥ एवमुक्त्वाततोब्रह्माक्षणेनांतरधीयत ॥ ५८ ॥

जायकै हे राजा! मैंने वंशकी बढावनहारी भार्या मांगी ॥ ५६ ॥ हे राजानमें श्रेष्ठ ! तब ब्रह्माने मोसों कह्यो कि, पहले तुम्हारे पुत्र होयगो और पीछे सूर्यके वंशमें उत्पन्न भार्या होयगी ॥ ५७ ॥ हे विप्रेन्द्र! सूर्यवंशमें उत्पन्न तुम्हारी भार्या होयगी ऐसे कहिकै ब्रह्मा वहांई अंतधान हो जात

भयो ॥ ५८ ॥ हे राजा ! ता पीछे चिंतायुक्त होके मैं आश्रममें आवत भयो कि मेरे पहले पुत्र कैसे होयगो और पीछे भार्या होयगी ॥ ५९ ॥ वनमें तप करत भयो जो मैं हौं ताके वीर्यको त्याग भयो ॥ ६० ॥ वह वीर्य मैंने कमलके दोनामें यत्नसों स्थापित कियो फिर वाको कुशा-

ततोहमाश्रमेराजन्नागतश्चिंतयान्वितः ॥ कथंमेप्रथमंपुत्रोभार्यापश्चाद्भविष्यति ॥ ॥ ५९ ॥ तप्यमानेचतपसिरेतस्स्कन्नंबभूवह ॥६०॥ तन्मयापद्मपुटकेवीर्यंक्षिप्तंप्रयत्नतः ॥ कुशैश्चवेष्टयित्वातुगङ्गामध्येविसर्जितम् ॥ ६१ ॥ ततस्तेकन्यकाराजन्गङ्गास्नानार्थमागता ॥ तदाघ्रायच्युतंसम्यग्गङ्गामध्येसमागतम् ॥६२॥ तेनैव गर्भसम्भूतिर्ममवीर्यान्नसंशयः ॥ नासाग्रेणतुनिष्क्रान्तोनासिकेतइतिश्रुतः॥ ६३ ॥

सनसों लपेटिके गङ्गाके मध्यमें छोडदियो ॥ ६१ ॥ हे राजन् ! ता पीछे वह कन्या गंगास्नानको आवत भई तब गंगामें आये भये वीर्यको सूँघत भई ॥ ६२ ॥ वाही मेरे वीर्यसों गर्भकी उत्पत्ति भई यामें संदेह नहीं है नासिकेत नामसों प्रसिद्ध यह पुत्र नासिकाके अग्रमें होके निकरचो

है याहीते याको नासिकेत नाम भयो है ॥ ६३ ॥ वैशंपायन बोले ॥ ता पीछे बडे विस्मयको
प्राप्त हो वह रघुराजा रनवासमें जात भयो ता पीछे राजा उस वृत्तांतको रानीसों कहत भयो ॥ ६४ ॥
फिर राजा सभामें आयके मुनिसों वचन बोलत भयो ॥ रघु बोले ॥ कि, हे विप्र ! मैं तुमको

वैशम्पायनउवाच॥ ततोविस्मयमापन्नोरघुरंतःपुरेऽव्रजत् ॥ तद्वृत्तान्तंततोराजा
स्वमहिष्यैन्यवेदयत्॥६४॥राजासभांसमागत्यमुनिंवचनमब्रवीत् ॥ रघुरुवाच ॥
कन्यांददामितेविप्रशृणुमेपरमंवचः ॥ ६५ ॥ रथेशुभतरेरम्येस्थित्वागच्छस्वमा
श्रमम् ॥ ममानुजीविभिर्युक्तासानयस्वसुतांमम ॥ ६६ ॥ एवमुक्तस्ततस्तेनतथे
वहिचकारसः ॥ आनीताचतदाकन्यासपुत्रारथसंस्थिता ॥ ६७ ॥

कन्या देता हौं मेरे परम वचन सुनो ॥ ६५ ॥ बहुत अच्छे सुंदर रथमें बैठिके अपने आश्रमको आप
जांय और मेरे नौकरन समेत मेरी बेटीको ले आओ ॥ ६६ ॥ वा राजा कारि ऐसे कहे गये वे

ऋषि वैसाही करत भये वा समय पुत्रसमेत रथमें बैठायकै वा कन्याको लावत भये॥ ६७ ॥ तब राजाने प्रसन्न हो भक्तिकी बढावनहारी ऐसी जो वह कन्या है ताको दान कियो ता पीछे व्याह करिकै राजाने पुत्रहू उनके अर्थ निवेदन कियो ॥ ६८ ॥ और दास दासी मोतीनके गहने

विवाह्यचततोराज्ञापुत्रैस्तस्मैमुनि ॥ दत्ताकन्यातदाराज्ञाप्रोत्फुल्लाभक्तिवर्द्धिनी ॥ हारग्रैवेयकेयूराद्या वेदितः ॥ ६८ ॥ दासान्दासीर्धनंधान्यंमुक्ताभरणकुण्डले ॥ रथान्गजान्हयान्वस्त्रमहिषीगोधनानिच राजा नामाणिक्यसंयुतान् ॥ ६९ ॥ ततोव्रजन्वनंवि रघुरदात्सर्वंदुहित्रेस्नेहसंयुतः ॥ ७० ॥ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ प्रोराजानंविनयान्वितम् ॥ धनंनानाविधंदृष्ट्वामुनिर्वचनमब्रवीत् ॥ ७१ ॥

और कुण्डल तथा हार गुलूबन्द और बाजूबंद जिनमें नानाप्रकारकी मणी जडी भई हैं ये सब उन ऋषिको देतभये ॥६९॥ और रथ, हाथी घोडे वस्त्र भैंसें और गऊनके समूह इन सब वस्तुनको राजा रघु अति प्रीति युक्त हो वा चन्द्रवती कन्याको देत भये ॥ ७० ॥ वैशंपायन बोले ॥ ता पीछे

वनको जाते भये वे उद्दालक द्विज नानाप्रकारके धन देखिके नम्रतायुक्त जो राजा है तासों वचन बोलत भये ॥ ७१ ॥ हे सुव्रत राजा । या बहुतसे धनको मैं कहा करौं यह सब भांति आपहीके घरमें रहै ॥ ७२ ॥ ऐसे कहिकै सब राज्य राजाको देके तपोवनको जात भये और स्त्रीपुत्र

किंकरोम्यहमेतेनधनेनाविपुलेनच ॥ तवैवसर्वथाराजन्गृहेतिष्ठतुसुव्रत ॥ ७२ ॥ इत्युक्त्वाराज्यमखिलंप्रतार्यागात्तपोवनम् ॥ प्रविष्टःस्वाश्रमेविप्रःसपुत्रः सकलत्रकः ॥ ७३ ॥ रेमेतयाचन्द्रवत्याततउद्दालकोमुनिः ॥ नासिकेतःसुतोभक्तोगङ्गातीरेसुखान्वितः ॥ ७४ ॥ विजहारमुदायुक्तोवयस्यैर्बालकैर्वृतः ॥ एकदातंनिजंपुत्रंशशापचापितारुषा ॥ ततःसंयमनींगत्वातथैवपुनरराययौ ॥ ७५ ॥

समेत अपने आश्रममें प्रवेश करत भये ॥ ७३ ॥ ता पीछे उद्दालक मुनि वा चंद्रवतीके साथ विहार करत भये और बडो भक्त नासिकेतनाम पुत्र गंगाके तीरमें सुखसों रहत भयो ॥ ७४ ॥ और मित्र जे बालक हैं तिनके साथमें आनंदसों विहार करत भयो एकबार क्रोध करिकै

पिता वा अपने पुत्रको शाप देत भये ता पीछे संयमनी जो यमराजकी पुरी है तामें जायके वैसेही फिर वह आवत भयो ॥ ७५ ॥ पुराण स्थित रम्य और पवित्र इस इतिहास कथाको कहै और जो सुने वह सब पापनते छूटि जाय ॥ ७६ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशव

इतिहासकथांरम्यांपुण्यांपौराणिकींशुभाम् ॥ कथयेच्छृणुयाद्यश्चसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥७६॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेचन्द्रवतीविवाहवर्णनंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

जनमेजयउवाच॥ एतत्पृच्छाम्यहंविप्रसंशयंमेह्यपानुद ॥ दुर्लभंपुत्रनामापिमनुष्याणांतपोनिधे ॥ १ ॥ किमर्थंदत्तवाञ्शापंपुत्रमुद्दिश्यसुव्रत ॥ कथंयमपुरींप्राप्तःकथंचागतवान्पुनः ॥ २ ॥

प्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायांनासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां चंद्रवतीविवाहोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

॥ जनमेजय बोले ॥ हे विप्र। मैं तुमसों यह पूछोंहों आप मेरे संदेहको दूरि करो हे तपोनिधि। लोकमें पुत्रको नामहू मनुष्यनको दुर्लभ है ॥ १ ॥ हे सुव्रत। उद्दालक ऋषि काहेके

लिये पुत्रको शाप देतभये और वह कैसे यमकी पुरीको गयो और फिर कैसे आय गयो ॥ २ ॥ वैशंपायन बोले ॥ हे राजन्! पहलेको वृत्तांत जैसे शाप दियो गयो और जैसे प्रसन्न नासिकेत पिता करिकै यमके लोकको पठाये गये ॥ ३ ॥ और फिर कर आगये सो सब तुमसों कहोंगो

शृणुराजन्पुरावृत्तंयथाशापोनियोजितः ॥ पित्रावैप्रेषितोगत्वाहर्षितोयमसादने ॥ ३ ॥ आगतःपुनरेवाथतत्सर्वंकथयामिते ॥ उद्दालकोमुनिवरः सुव्रतंपुत्रमेकदा ॥ ४ ॥ उवाचपुत्रगच्छेतिवनंशीघ्रंसमानय समित्कुशफलानीतिह्यग्निहोत्रंयथाभवेत् ॥ ५ ॥ इतिश्रुत्वापितुर्वाक्यंनासिकेतोवनंप्रति ॥ जगामतत्रसमुनिर्यत्रास्तेशोभनंसरः ॥ ६ ॥

एकबार मुनिवर उद्दालक सुव्रत पुत्रसों कहत भये ॥ ४ ॥ कि, हे पुत्र ! वनको जाओ और समिधैं कुशा तथा पत्ते शीघ्रही लाओ जासों अग्निहोत्र होय ॥ ५ ॥ यह पिताको वचन सुनिकै

नासिकेत मुनि वहाँ जातभये जहाँ एक सुंदर सरोवर हो ॥ ६ ॥ नानाप्रकारके वृक्ष लतानसे भरे भये और फलमूलनसों युक्त तथा नानाप्रकारके पक्षीन करि सेवन कियो गयो ऐसे वनको देखतभयो ॥ ७ ॥ नानाप्रकारके कमलनसों शोभायमान जो सुंदर सरोवर है तामें विधि-

दृष्ट्वारण्यंशुभंरम्यंनानाद्रुमलताकुलम् ॥ फलमूलयुतंचैवनानापक्षिनिषेवितम् ॥७॥
शुभेसरोवरेतत्रविविधोत्पलमाण्डिते ॥ स्नानंकृत्वातुतत्रैवविधिदृष्टेनकर्मणा ॥ ८ ॥
देवार्चनंकृतंतेनदिव्यपुष्पैश्चनीरजैः ॥ नैवेद्यफलमूलाद्यैर्दैवतापितृतर्पणैः॥९॥योग
मालभ्यतत्रैवधारणाध्यानकर्मणा ॥ देवार्चनंचयोगंचनित्यंसंपाद्ययत्नतः ॥ १०॥

पूर्वक स्नान आदि कर्म करत भयो ॥ ८ ॥ और वहां नासिकेतने सुंदर दिव्यकमलनसों देवतानको पूजन कियो और देवता तथा पितरनको तर्पण करिकै फलमूल आदिकी नैवेद्य करी ॥ ९ ॥ और धारणा तथा ध्यानकर्मसों वहाँई योगको आरंभ करि देवतानको पूजन और

योगको जतनसों सदा करतो भयो ॥ १० ॥ और शोचन लगो कि, मेरे पिताके अग्निहोत्रमें मेरो
कियो भयो विघ्न उत्पन्न भयो है ऐसे मनमें निश्चय करिकै पिताके आश्रमको आवत भयो
॥ ११ ॥ ता पीछे उद्दालक मुनि देरमें आये भये पुत्रको देखि क्रोधसों लाल हैं नेत्र जिनके ऐसे

पितुर्मेविघ्नमुत्पन्नमग्निहोत्रेतुमत्कृतम् ॥ इतिनिश्चित्यमनसापितुराश्रममागमत् ॥
॥ ११ ॥ ततउद्दालकःक्रुद्धोदृष्ट्वापुत्रंचिरागतम् ॥ उवाचक्रोधताम्राक्षोह्यग्निहोत्रवि
घातकम् ॥ १२ ॥ किंतत्रफलमूलार्थंचिरंगत्वावनान्तरे ॥ स्थितंत्वयामंदभाग्य
यज्ञेविघ्नः कृतोमम ॥ १३ ॥ अग्निहोत्रेणतृप्यंतिब्रह्माद्यादेवतागणाः ॥ तथापितृग
णाः सर्वेतेषांविघ्नः कृतस्त्वया ॥ १४ ॥

हो अग्निहोत्रमें-विघ्न करनहारे वा पुत्रसों बोलत भये ॥ १२ ॥ दूसरे वनमें फल मूल आदि
लेने जायके बहुत देरलौं काहेको ठहरो रे मंदभाग्य ! तैंने हमारे अग्निहोत्रमें विघ्न कियो
॥ १३ ॥ अग्निहोत्रसों ब्रह्मा आदि देवतानके गण तृप्त होयँ हैं तैसे पितृगणहू सब तृप्त होयँ हैं

उनको तैंने विघ्न कीन्हों ॥ १४ ॥ पिताके वा वचनको सुनिकै वह तपस्वी फिर बोलत भयो ॥ १५ ॥ कि. हे तात ! यह अग्निहोत्र संसारका बंधन है और संसारमें परेभये जीवनको जन्म मृत्यु और महामोह निश्चय होय है ॥ १६ ॥ योगाभ्यासते परे संसारसमुद्रते पार करनहारो

पितुस्तद्वचनंश्रुत्वाप्रत्युवाचसतापसः ॥ १५ ॥ अग्निहोत्रमिदंतातसंसारस्यतुबन्धनम् ॥ जन्ममृत्युमहामोहाः संसारेपततांध्रुवम् ॥१६॥ योगाभ्यासात्परंनास्तिसंसारार्णवतारणम् ॥ ब्रह्माद्यादेवताः सर्वेइन्द्राद्याःकश्यपात्मजाः॥सर्वेयोगवशात्सिद्धागतास्ते परमां गतिम् ॥ १७ ॥ उद्दालक उवाच ॥ सर्वाश्रमेषु भो पुत्र ये चान्येतपसिस्थिताः ॥ अग्निहोत्रमुपासन्तेस्वर्गलोकाय्यसुव्रत ॥ १८ ॥

और कुछ नहीं है ब्रह्मा आदिक सब देवता और इंद्र आदिक सब कश्यपके पुत्र ये सब योगके वशसों सिद्ध भये और वे परम गतिको प्राप्त भये ॥ १७ ॥ उद्दालक बोले ॥ हे पुत्र ! सब आश्रमनमें स्थित तथा जे कोई तपमें स्थित हैं हे सुव्रत ! वे स्वर्गलोकके लिये अग्निहोत्रकी उपा

सना करैं हैं ॥ १८ ॥ नासिकेत बोले ॥ स्वर्गमें जायकै संसारमें निश्चय करि फिर जन्म होयहै योगाभ्याससे परे कुछ नही है और न भयो न होयगो ॥ १९ ॥ हे प्रभो ! अग्निहोत्र न करनो चाहिये योगाभ्यास करौ ॥ २० ॥ वैशंपायन बोले ॥ उद्दालक वाको सुनिकै अपने पुत्रपर क्रोधित

नासिकेतउवाच ॥ स्वर्गं गत्वा पुनर्जन्म संसारे भवतिध्रुवम् ॥ योगाभ्यासात्परंनास्तिनभूतंनभविष्यति ॥ १९ ॥ नकार्यमग्निहोत्रंतुयोगाभ्यासंकुरुप्रभो ॥ २० ॥ वैशम्पायनउवाच॥ उद्दालकस्तुतच्छ्रुत्वाक्रुद्धःसंस्तनयंप्रति॥ उवाचगच्छशीघ्रंत्वंयमंपश्यसुताधम ॥ २१ ॥ ततःशापेनरौद्रेणपतितोधरणीतले ॥ प्रणाममितिप्रत्युक्त्वानासिकेतोमहात्मवान् ॥ २२ ॥

होत भये और बोले कि; हे अधम पुत्र ! तू शीघ्र जा और यमराजको देख ॥ २१ ॥ ता पीछे या भयानक शापसो पृथिवीमें गिरत भयो और प्रणाम है अर्थात् मैंने आपको शाप अंगीकार कियो ऐसे वह महात्म।

नासिकेत प्रत्युत्तर दत भयो ॥ २२ ॥ हे महाराज ! जहां वैवस्वत कहिये सूर्यके पुत्र यमकी स्थिति है वाको मैं आपकी आज्ञासों देखोंगो तब पुत्रको पतित देखिकै ऋषि बहुतही व्याकुल होतभये ॥ २३ ॥ बडे शोकसों संतप्त हो बहुतही विलाप करत भये और हा पुत्र । हा श्रेष्ठ शिशु ।

वैवस्वतास्थितिर्यत्रपश्याम्येवतवाज्ञया ॥ पतितंपुत्रकंदृष्ट्वाऋषिर्जातोतिविह्वलः ॥
॥ २३ ॥ महाशोकेनसंतप्तोविललापातिदुःखितः ॥ हापुत्रहावराशिशोहाज्ञानि
न्हासुबुद्धिमन् ॥ २४ ॥ अहंपापीदुराचारीह्यहंक्रोधीद्विजाधमः ॥ यत्रवैवस्वतोरा
जादारुणानरकास्तथा ॥ २५ ॥ तत्रत्वयानगंतव्यंप्रायश्चित्तंविमर्शय ॥ एवंविल
प्यमानंतंपुत्रः पुनरभाषत ॥ २६ ॥

हा ज्ञानी ! हा अच्छी बुद्धिवाले ! ॥ २४ ॥ मैं पापी हों दुराचारी हों क्रोधी हों और ब्राह्मणमें अधम हों जहां वैवस्वतराजा हैं और दारुण नरक है ॥ २५ ॥ वहां तुमको न जानो चाहिये प्रायश्चि-

त्तको विचार करो या प्रकार विलाप करते भये मुनिसों पुत्र फिर बोलत भयो ॥ २६ ॥ जाते मेरो
तुम्हारो नमस्कार है हे अनघ ! जो वचन तुमने कहो वाको मैं सत्य करौंगो कबहूँ अन्यथा न
होयगो ॥ २७ ॥ मैं आपकी आज्ञा करौंगो हे महामति ! ऐसे माति कहौ सत्यसों सूर्य तपै है और

यतस्तेमेनमस्कारोयत्त्वयोक्तंवचोनघ ॥ तत्सत्यंचकरिष्यामिनान्यथास्यात्कदा
चन ॥ २७ ॥ आज्ञांतवकरिष्यामिमैवंवदमहामते ॥ सत्येनतपतेसूर्यः सत्येनपृथि
वीस्थिता ॥२८॥ सत्येनज्वलतेवह्निःसर्वंसत्येप्रतिष्ठितम् ॥ अश्वमेधसहस्रंवैसत्येन
तुलयेन्नहि ॥२९॥ सत्येनगम्यतेस्वर्गःसत्येनपरमांगतिम् ॥ सत्यधर्मविहीनस्यनर
केपतनंध्रुवम् ॥ ३० ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनशोकंत्यक्त्वास्थिरोभव ॥ ३१ ॥

सत्यसों पृथिवी स्थित है ॥ २८ ॥ सत्यसों अग्नि जलै है सब सत्यहीमें प्रतिष्ठित है हजार अश्वमेध यज्ञहू
सत्यके साथ नहीं तुलैं हैं ॥ २९ ॥ सत्यसों स्वर्गमें जाय हैं और सत्यसे परमगति कहिये मोक्ष
होय है और जो धर्मसों विहीन है वाको निश्चय नरकमें पतन होयहै ॥ ३० ॥ तातें सब यत्ननसों

शोकको त्याग करिकै स्थिर होजाओ ॥ ३१ ॥ शीघ्रही यमके पुरको और धर्मराजके मंदिरको
देखि शीघ्रही आपके चरणनमें आऊँगो ॥ ३२ ॥ वैशंपायन बोले ॥ पहले पिताके चरणको नम
स्कार करि फिरि स्वयंभू जे ब्रह्मा हैं तिनको प्रणाम करि विनीत है आतमा जाको ऐसो नासिकेत

दृष्ट्वायमपुरंसद्योधर्मराजस्यमंदिरम्॥शीघ्रंचैवागमिष्यामितवपादसमीपतः ॥३२॥
वैशम्पायनउवाच॥॥पितृपादौप्रणम्यादौनमस्कृत्वास्वयंभुवे ॥ नासिकेतोविनीता
त्माक्षणेनांतरधीयत॥३३॥तस्यसर्वप्रयत्नेनशापमेवप्रलापयन्॥ संप्राप्तोवायुवेगेन
यत्रराजास्वयंयमः॥३४॥ददर्शधर्मराजानंज्वलंतमिवपावकम्॥ सिंहासनसमारूढं
सूर्यपुत्रंमहाबलम्॥३५॥इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेयमदर्शनंनामपंचमोऽध्यायः५॥

क्षणहीमें अंतर्धान होजातभयो ॥ ३३ ॥ सब जतनसों पिताके शापको सत्य करतो भयो वह
नासिकेत पवनके वेगसों जहां यमराज है वहाँ प्राप्त होत भयो ॥ ३४ ॥ और अग्निके समान

प्रकाशमान सिंहासनपर बैठेभये ऐसे महाबली सूर्यके पुत्र जे यमराज हैं तिनको देखत भयो ॥ ३८ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां यमदर्शनो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ वैशंपायन बोले ॥ विद्या और विनयसों

वैशम्पायन उवाच॥प्रविष्टस्तुसभामध्येविद्याविनयभूषितः॥तेनस्तोत्रंसमारब्धंधर्मराजस्यशोभनम् ॥ १ ॥ नासिकेतउवाच. ॥ ॥ नमस्तेधर्मराजायत्रैलोक्यस्यपितामह ॥ सर्वलोकस्यसंगोप्त्रेनमःसर्वहितायच ॥ २ ॥ मार्तण्डसूनवेदिव्यदेहायामिततेजसे ॥ नमस्तेऽविभक्तायनिर्मलायचतेनमः ॥ ३ ॥

भूषित वह नासिकेत यमकी सभामें जातभयो फिर वाने सुंदर यमके स्तोत्रको आरंभ कियो ॥ १ ॥ नासिकेत बोलो ॥ तीनों लोकके पितामह जे आप धर्मराज हैं तिनको नमस्कार है और तीन लोकनके रक्षा करनहारे और सबके हितकारी जे आप हैं तिनको नमस्कार है ॥ २ ॥ सूर्यके पुत्र

दिव्य देह और अमित है तेज जिनको ऐसे जे आप हैं तिनको नमस्कार है और हे धर्मराज ! रविके भक्त निर्मल रूप जे आप हैं तिनको नस्मकार है ॥ ३ ॥ सुंदर कांति करिके युक्त है स्वरूप जिनका और देवतानकरिके पूजित जे आप हैं तिनको नमस्कार है और धर्मके अधिकारी तथा बहुत रूप

सुप्रभाढ्यस्वरूपायनमस्तेसुरपूजिते ॥ धर्माधिकारिणेश्रीमन्नमस्तेबहुरूपिणे ॥
॥ ४ ॥ नमोधर्मायमहते नमः पापान्तकाय च ॥ ज्ञानविज्ञानरूपायधर्ममूर्तेन
मोस्तुते ॥ ५ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ नासिकेतकृतंस्तोत्रंप्रत्यक्षंपापनाशनम् ॥
यःपठेत्प्रयतः सम्यग्धर्मराजस्यकीर्तनम् ॥ ६ ॥

धारण करनहारे जे श्रीमान् आप हैं तिनको नमस्कार है ॥ ४ ॥ बडे धर्मरूप और पापके नाश करनहारे जे आप हैं तिनको नमस्कार है और ज्ञान विज्ञानरूप धर्ममूर्ति जे आप हैं तिनको नमस्कार है ॥ ५ ॥ वैशंपायन बोले ॥ कि नासिकेतको कियो भयो स्तोत्र

प्रत्यक्ष पापको नाश करनहारो है जो सावधान होके धर्मराजके कीर्तनको भली भाँति पढे है ॥ ६ ॥
वाके आधि कहिये मानसी व्यथा और काय जो शरीर है तामें रोगको भय नही है और वाके ऊपर
यमराज संतुष्ट होय है और वह नरकको नहीं देखै है ॥ ७ ॥ विप्रकारि कहे भये या स्तोत्रको सुनिके धर्म-

नैवतस्यभवेदाधिः कायेरोगभयंनहि ॥ यमस्तुष्टोभवेत्तस्यनरकांश्चनपश्यति॥७॥
श्रुत्वाविप्रेरितंस्तोत्रंधर्मराजोवचोब्रवीत् ॥ तुष्टोहंतवविप्रेंद्रब्रूह्यागमनकारणम् ॥८॥
नासिकेतउवाच ॥ पित्राक्रुद्धेनशप्तोहंयमंपश्येतिभानुज ॥ तदाज्ञयात्रसंप्राप्तो
योगमार्गेणवेगतः ॥ ९ ॥

राज वचन बोलत भये हे विप्र ! मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हौं अपने आवनेको कारण कहौ ॥ ८ ॥ नासिकेत
बोले ॥ हे सूर्यपुत्र ! पिताने क्रुद्ध होके यह शाप दियो है कि, तू यमको देख सो मैं उनकी आज्ञासों यहां

योगमार्गकरि वेगसों आयो हौं ॥ ९ ॥ यम बोले कि हे महाप्राज्ञ ! तुम कहा पूछो हो वाको सुखसों विचार
करौ और जो तुम्हारे मनमें होय सो वर मांगो मैं देऊँगा ॥ १० ॥ नासिकेत बोले ॥ कि हे देव ! जो
तुम मोपर प्रसन्न हो तौ मोको यह वर देउ कि, तुम्हारी सब पुरीको देखौं और चित्रगुप्त लेखकहूको देखौं

यमउवाच ॥ किंपृच्छसिमहाप्राज्ञविचारययथासुखम् ॥ वरंब्रूहिप्रयच्छामिय
त्तेमनसिवर्त्तते ॥ १० ॥ नासिकेतउवाच ॥ यदितुष्टोसिमेदेववरमेनंप्रयच्छमे ॥
पश्यामितेपुरींसर्वांचित्रगुप्तंचलेखकम् ॥ ११ ॥ दुष्कृतीपच्यतेयत्रसुकृतीसुखमे
धते ॥ एतदिच्छामिसंद्रष्टुंप्रसादंकुरुसूर्यज ॥ १२ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ किंकरांस्त
त्राहूयधर्मराजेनभाषितम् ॥ एनंविप्रंमहाप्राज्ञंसत्यव्रतपरायणम् ॥ १३ ॥

॥ ११ ॥ और जहां पापी दुःख पावैं हैं तथा पुण्यात्मा सुख पावैं हैं यह सब मैं देखो चाहौं हौं हे सूर्यके
पुत्र ! मोपै प्रसन्न होउ ॥ १२ ॥ वैशंपायन बोले ॥ तव यमराज अपने सेवकनको बुलायके कहतभये कि,

सत्यव्रतमें परायण या बड पंडित ब्राह्मणको तुम लेजाउ ॥ ॥ १३ ॥ और पिताके शापसों यहां आये-
भये याको मेरी पुरी दिखाओ ॥ १४ ॥ तब वे सब किंकर चित्रगुप्तके घरमें हे भारत ! नासिकेत समेत
जायकै वे सब चित्रगुप्तके द्वारपालनसों कहत भये ॥ १५ ॥ कि, यह महात्मा नासिकेत ब्राह्मण यम

पितुःशापादिहायातंदर्शयन्तुपुरींमम ॥ तदातेकिंकराः सर्वेचित्रगुप्तस्यवेश्मनि ॥
॥ १४ ॥ गत्वातत्रैवसहितानासिकेतेनभारत ॥ चित्रगुप्तस्यतेसर्वेद्वारपालमथा
ब्रुवन् ॥ १५ ॥ यमेनप्रेषितोविप्रोनासिकेतोमहात्मवान् ॥ श्रोतव्यंवचनंचास्य
दर्शयस्वपुरंमहत् ॥ १६ ॥ इतिदूतवचः श्रुत्वाद्वारपालोऽब्रवीद्वचः ॥ चित्रगुप्तंनम
स्कृत्यधर्मराजस्यलेखकम् ॥ १७ ॥

कारिकै पठायो गयो है सो याको वचन सुनिये और यह बडो पुर याहि दिखाइये ॥ १६ ॥ यह दूतको
वचन सुनिकै द्वारपाल बोलत भयो और धर्मराजके लेखक चित्रगुप्तको नमस्कार कारिकै कहत भयो ॥ १७ ॥

हे देव ! वचन सुनिये यम करिके पठायो गयो ब्राह्मण यमके दूतनसमेत आपके द्वार पे स्थित है ॥ १८ ॥ चित्रगुप्त बोले ॥ कि हे दूतो ! वा ब्राह्मणको बहुत शीघ्र मेरे समीप लाओ ॥ १९ ॥ चित्रगुप्तको वचन सुनिके वह उन सबनको लावत भयो और चित्रगुप्त उनसों बोलत भये कि,

वचनंश्रूयतांदेवयमेनप्रेषितोद्विजः ॥ सहितोयमदूतैश्चद्वारेतिष्ठतितेऽनघः ॥ १८ ॥ चित्रगुप्तउवाच ॥ विप्रंतुत्वारितंदूतसमानयममान्तिकम् ॥ चित्रगुप्तवचः श्रुत्वासोपिसर्वान्समानयत् ॥ १९ ॥ उवाचचित्रगुप्तस्तान्किंकार्यंब्रूतसुव्रताः ॥ २० ॥ [illegible]त्वाऊचुः ॥ प्रेषिताः स्मोमहाभागधर्मराजेनधीमता ॥ तेनाज्ञप्तंमहाप्राज्ञतत्कु[illegible]विलम्बितम् ॥ २१ ॥

[illegible] ! कहा काम है सो कहो कहो ॥ २० ॥ दूत बोले ॥ हे महाराज ! हम महाभाग [illegible] पठाये गये हैं ताते हे महाप्राज्ञ ! उनने जो आज्ञा दीन्ही है वाको तुम शीघ्र

करौ ॥ २१ ॥ बडो पंडित और सत्यधर्ममें परायण जो यह ब्राह्मण है सो पिताके शापके योगसों
यमपुरमें प्राप्त भयो है, सो यह जो जो वांछा करै सो सो करने योग्य है ॥ २२॥ चित्रगुप्त बोले ॥
कि; हे महाप्राज्ञ। विप्र जो तुम चाहौहो सो कहौ हे द्विजश्रेष्ठ। धर्मराजकी आज्ञा मोको प्रमाण है

सोयंविप्रोमहाप्राज्ञः सत्यधर्मपरायणः ॥ पितुः शापाच्चयोगेनप्राप्तोवैवस्वतंपुरम् ॥
अस्य वाञ्छाप्रकर्त्तव्यायद्यदिच्छति वै द्विजः ॥ २२ ॥ चित्रगुप्त उवाच ॥
ब्रूहिविप्रमहाप्राज्ञयत्त्वमिच्छसितद्वद ॥ धर्मराजस्यचाज्ञामेप्रमाणंद्विजसत्तम
॥ २३ ॥ नासिकेतउवाच ॥ महावीर्यमहातेजोधर्माधर्मविचारक ॥ त्वंचित्रंसर्व
भूतानांसर्ववेत्सिशुभाशुभम् ॥ २४ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ एवंचतोषितस्तेन
चित्रगुप्तोमहात्मवान् ॥ हर्षितोद्विजवाक्येनपुनरेवाब्रवीद्द्विजम् ॥ २५ ॥

॥ २३ ॥ नासिकेत बोले ॥ हे बडे पराक्रमी ! हे बडे तेजस्वी ! हे धर्म अधर्मके विचार करनहारे !
तुम सब भूतनके शुभ अशुभ कर्मनको जानो हो ॥ २४ ॥ वैशंपायन बोले ॥ ऐसे संतुष्ट

करे गये महात्मा चित्रगुप्त या ब्राह्मणके वचनसों प्रसन्न हो वासों फिरि बोलत भये ॥ २५ ॥
हे ज्ञानविज्ञानसों युक्त द्विजोत्तम । मैं तुमसों प्रसन्न हौं और जो तुम्हारे मनमें है सो वर मैं तुमको
देउँहौं ॥ २६ ॥ नासिकेत बोले ॥ मैं तुम्हारी सब पुरीको देखौं और दुःख तथा सुखनको देखौं

ज्ञानविज्ञानसंयुक्ततुष्टोऽहंतेद्विजोत्तम ॥ ददामितेवरंशीघ्रंयत्तेमनासिवर्तते ॥ २६॥
नासिकेतउवाच ॥ पश्यामिवः पुरींसर्वांदुःखानिचसुखानिच ॥ एतच्छ्रुत्वावचोभू
यश्चित्रगुप्तोवचोऽब्रवीत् ॥ २७ ॥ भोदूताममवाक्येनसत्वरंद्विजपुङ्गवम् ॥ विषमं
चशुभंसर्वं दर्शयन्तुपुरंमहत् ॥ २८ ॥ यथानपीडयतेविप्रोव्याधिभिर्नरकैस्तथा ॥
दर्शयित्वाचविप्रेन्द्रंपुनरत्रानयंतुच ॥ २९ ॥

या वचनको सुनिकै चित्रगुप्त फिरि वचन बोलत भये ॥ २७ ॥ हे दूतो । मेरे वचनसों तुम या
श्रेष्ठ ब्राह्मणको विषम तथा शुभ सब मेरो बडो पुर शीघ्र दिखाओ ॥ २८ ॥ जैसे यह विप्र नरक

न कारिकै औरहु व्याधिन करि पीडित न होय ऐसे या विप्रेंद्रको सब दिखाकै फिरि यहाँ ले आओ ॥ २९ ॥ चित्रगुप्त करिकै आज्ञादिये गये बहुत शीघ्र चलनहारे दूतनने धर्मराजकी आज्ञासों बडी वह सब पुरी नासिकेतको दिखाई ॥ ३० ॥ और फिरि उनको चित्रगुप्तके घरको

चित्रगुप्ताज्ञयासर्वैर्दूतैस्त्वरितगामिभिः ॥ दर्शयित्वापुरींसर्वांपृथुलांधर्मशासनात् ॥ ॥ ३० ॥ आनीतः पुरतस्तस्यचित्रगुप्तस्यवेश्मनि ॥ चित्रगुप्तउवाच ॥ नीयतांवै द्विजः शीघ्रंधर्मराजस्यसन्निधौ ॥ ३१ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ तंप्रणम्यगतस्तत्रयत्रवैवस्वतः स्थितः ॥ यमश्चाप्यागतंदृष्ट्वानासिकेतंमहत्तमम् ॥ ३२ ॥ अर्घ्यपाद्यासनैरेनंनासिकेतमपूजयत् सुखासीनस्यविप्रस्ययमोवचनमब्रवीत् ॥ ३३ ॥

लावत भये ॥ चित्रगुप्त बोले । या ब्राह्मणको शीघ्रही धर्मराजके समीप ले जाओ ॥ ३१ ॥ वैशंपायन बोले ॥ चित्रगुप्तको प्रणाम कारिकै जहाँ वैवस्वत है वहां जात भये और यम हूँ अति श्रेष्ठ नासिकेतको आयो भयो देखि ॥ ३२ ॥ अर्घ्य पाद्य और आसन आदिसों नासिकेतको पूजन

करत भये फिरि सुखसों बैठे भये वा ब्राह्मणसों यमराज वचन बोलत भये ॥ ३३ ॥ हे नासिकेत महाभाग ! तुम नाना प्रकारके स्थान और चित्रगुप्त लेखकको देखिके सुखसों आये ? ॥ ॥ ३४ ॥ नासिकेत बोले ॥ कि तुम्हारे प्रसादसों मैंने स्वर्ग और नरक देखो मेरे पिता मेरे मोहसों मोहित हो दुःखसों घोर वनमें

नासिकेतमहाभागह्यागतस्त्वंसुखेनच ॥ दृष्ट्वाचविविधंस्थानंचित्रगुप्तंचलेखकम् ॥ ३४ ॥ नासिकेतउवाच ॥ त्वत्प्रसादान्मयादृष्टः स्वर्गश्चनरकस्तथा ॥ पितामेदुःखतोघोरेवनेतिष्ठतिमोहितः ॥ ३५ ॥ तस्यपादौप्रपश्यामिस्वामिन्नाज्ञाभवेद्यदि ॥ ॥ यमउवाच ॥ ॥ गच्छद्विजवरश्रेष्ठयत्रतिष्ठतितेपिता ॥ ३६ ॥

स्थित हैं ॥३५॥ हे स्वामी ! जो आज्ञा होय तो मैं उनके चरण जायके देखों ॥ यम बोले ॥ हे द्विजवरमें श्रेष्ठ ! जहाँ तुम्हारे पिता हैं वहाँ जाओ ॥ ३६ ॥

हे विप्र ! तप और योगबलसों युक्त तुम अजर अमर और सब दोषन करिकै रहित होउ ॥ २७ ॥
वैशंपायन बोले ॥ ऐसे कहेगये वे द्विजोत्तम धर्मराजको नमस्कार करि जा मार्ग-
सों गये हैं वाही मार्गसों फिरि आय जात भये ॥ ३८ ॥ आधेही पलमें जहां पिता है वहां आय

अजरश्चामरश्चैवसर्वदोषविवर्जितः ॥ भवत्वमक्षयोविप्रतपोयोगबलान्वितः ॥३७॥
वैशम्पायनउवाच ॥ एवमुक्तोनमस्कृत्यधर्मराजंद्विजोत्तमः ॥ गतोसौयेनमार्गेण
तेनैवपुनरागतः ॥३८॥ यत्रस्थितःपितातत्रसंप्राप्तोनिमिषार्द्धतः ॥ उद्दालकोमहात्मा
नंदृष्ट्वापुत्रंसमागतम्॥ उवाचतंपरिष्वज्यनमंतंपादयोर्मुहुः॥३९॥ उद्दालकउवाच॥
अद्यमेसफलंजन्मह्यद्यमेसफलाः क्रियाः॥ अद्यमेसफलंसर्वंयज्जातंपुत्रदर्शनम्॥४०॥

जात भये तब उद्दालक आये भये महात्मा पुत्रको दोलि चरणनमें नमत भये वाको छातीसों
लगायकै बोलत भये ॥ ३९ ॥ उद्दालक बोले ॥ आज मेरो जन्म सफल भयो और आज मेरी

क्रिया सफल भई और पुत्रको जो दर्शन भयो ताते आज मेरो सब सफल भयो ॥ ४० ॥ मैं क्रोधी दुराचारी निर्दयी और पाप कर्मनको करनहारो हौं विना अपराधके मैंने पुत्रको शाप दियो ॥ ४१ ॥ पुत्रको आयो भयो देखि हर्षित होके माता बोलत भई ॥ ४२ ॥ मेरे पुत्रको

अहंक्रोधीदुराचारीनिर्दयःपापकर्मकृत् ॥ विनापराधंपुत्रंतुमयाशापोनियोजितः ॥
॥ ४१ ॥ दृष्ट्वापुत्रंसमायातंमाताप्रोवाचहर्षिता ॥ पश्यपश्यप्रभावंवैमत्पुत्रस्यसु
शोभन ॥४२॥ ॥ शीघ्रंचैवयमंदृष्ट्वाचागतोयमसादनात् ॥४३॥ उद्दालकउवाच ॥
कथंयमपुरींप्राप्तःकथं शीघ्रमिहागतः ॥ कीदृशोयमलोकस्यपन्थाश्चैवयम
स्तथा ॥ ४४ ॥

सुन्दर प्रभाव देखौ जो यमको देखिकै यमके वरते शीघ्र यहां आय गयो ॥ ४३ ॥ उद्दालक बोले ॥ यमकी पुरीमें कैसे पहुँचो और कैसे शीघ्रही यहां आयगयो और यमलोकको मार्ग कैसो है और

कथंलब्धंत्वयापुत्रभोजनंपानमेवच ॥ यत्किंचित्तत्रवैदृष्टंतत्सर्वंब्रूहिमेसुत ॥ ४५॥ नासिकेतउवाच ॥ त्वत्प्रसादादहंतातसंप्राप्तोयमसादनम् ॥देवाश्चाविविधादृष्टाय मश्चभगवान्प्रभुः ॥ ४६ ॥ चित्रगुप्तोमयादृष्टःसर्वलोकानुशासनः ॥ दृष्टश्चधर्मराजोवैस्तुतिभिस्तोषितोमया ॥ तुष्टेनमेवरोदत्तोह्यजरश्चामरोभव ॥ ४७ ॥ ॥

इति श्री.नासिकेतोपाख्यानेषष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥

यम कैसे हैं ॥ ४४ ॥ हे पुत्र ! तुमने भोजन और पान कैसे पायो तुमने जो कुछ वहां देखो होय सो सब हे पुत्र ! मोसों कहौ ॥ ४५ ॥ नासिकेत बोले ॥ हे पिता ! मैं तुम्हारे प्रसादसों यमके लोकमें पहुँचा वहां नाना प्रकारके देवता देखे और भगवान् प्रभु यमहूँ देखे ॥ ४६ ॥ और सब लोकके अनुशासन करनहारे चित्रगुप्त मैंने देखे और धर्मराज देखे और मैंने स्तुति करिकै उनको संतुष्ट किये तब संतुष्ट भये यमराजने मोको वर दियो कि, तू अजर अमर हो ॥ ४७ ॥ इतिश्रीमपत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्मांद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

वैशंपायन बोले ॥ ता पीछे सब ऋषि या उपाख्यानको सुनिके विस्मयको प्राप्त होत भये कि, यमके भवनमें जायकै फिरि यहां कैसे आय गयो ॥ १ ॥ वा समय तप और व्रतनके करनहारे बहुतसे मुनीश्वर वा उद्दालक मुनिके आश्रममें पूँछिबेको आवत भये ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ ऋषयश्चततःश्रुत्वासर्वेविस्मयमागताः ॥ यमस्यभवनंगत्वा
मुनिंपुनरिहागतम् ॥ १ ॥ आगताश्चाश्रमेतस्यमुनेरुद्दालकस्यच ॥ प्रश्नार्थंचसमा
यातास्तपोव्रतसमन्विताः ॥ २ ॥ पक्षोपवासिनःकेचिद्येचान्येजलवासिनः ॥ अधो
मुखास्तथैवान्येवायुभक्षास्तथापरे ॥ ३ ॥ येचाग्निसाधकाश्चान्येनिराहारास्तप
स्विनः ॥ ४ ॥

॥ २ ॥ कोई पक्षके उपवास करनहारे हैं और कोई जलमें वास करनहारे और कोई नीचेको मुख राखनहारे हैं तथा कोई पवनको आहार करनहारे हैं ॥ ३ ॥ और जे अग्निको साधनहारे निराहार तपस्वी हैं वेऊ आवत भये ॥ ४ ॥ और बडो जो दारुण तप है ताके करबेके

एक पांवसों ठाढे रहत हैं वेऊ आवत भये और संन्यासी तथा वनवासी और मौन व्रतके धारन करनहारेहू आवत भये ॥ ५ ॥ और जप तथा यज्ञमें तत्पर बडो उग्र है तेज जिनको ऐसे ऋषि

एकपादेनतिष्ठन्तस्तपस्तप्तुंसुदारुणम् ॥ संन्यासिनोवनस्थाश्चमौनव्रतपरायणाः ॥
॥ ५ ॥ जपयज्ञरताः केचिदृषयश्चोग्रतेजसः ॥ योगाभ्यासरताःकेचित्तापसाब्रह्म
चारिणः ॥ ६ ॥ शुष्कपर्णाशनाःकेचित्तथामासोपवासिनः ॥ पप्रच्छुर्मिलिता
सर्वेनासिकेतंमहामुनिम् ॥ ७ ॥ उद्दालकात्मजप्राज्ञदृष्टंचैवत्वयाद्भुतम् ॥ ८ ॥

और कोई योगाभ्यासमें लगेभये और कोई तपस्वी तथा ब्रह्मचारीहू आवत भये ॥ ६ ॥ कोई सूखे पत्तनके खानहारे और कोई एक महीनाको व्रत करनहारे ऐसे बहुतसे ऋषि आवत भये और सब मिलिके नासिकेत महा मुनिसों पूछत भये ॥ ७ ॥ हे बडे पंडित उद्दालकके पुत्र !

हे महाभाग नासिकेत ! परलोककी कथाको कहो कि यमको तुमनें जो अद्भुत देखो है ॥ ८ ॥ और यमके दूत कैसे हैं वहांकी मर्यादा कहा है लोक कैसो है और वाको मार्ग कैसो है ॥ ९ ॥ और वहां और हे द्विज ! वहांके लोग कैसे हैं क्रोधी हैं अथवा मीठो वचन वोलैं हैं ॥ १० ॥

नासिकेतमहाभागपरलोककथांवद ॥ कीदृशोयमलोकश्चतस्यमार्गश्चकीदृशः ॥ ९ ॥ कीदृशायमदूताश्चकास्थितिर्वर्त्ततेद्विज ॥ कीदृशस्तत्रलोकश्चक्रोधीवा प्रियवाग्द्विज ॥ १० ॥ कीदृशानरकास्तत्रकेनपापेनकोभवेत् ॥ सत्यंब्रूहिम हाप्राज्ञऋषयःप्रष्टमागताः ॥ ११ ॥ नासिकेतउवाच ॥ श्रूयतामृषयःसर्वेयेचान्ये तपसिस्थिताः ॥ नमस्कृत्यमहादेवंधर्मराजमहामतिम् ॥ तत्रदृष्टंप्रवक्ष्यामिमहान्तं रोमहर्षणम् ॥ १२ ॥

हे महाप्राज्ञ ! सत्य कहो ऋषि पूछिबेको नरक कैसे हैं और कौनसे पापते कौनसो नरक मिलै है ॥ ११ ॥ नासिकेत बोले ॥ हे सब ऋषियो ! सुनो और जे अन्य ऋषि तपस्यामें आये हैं

बैठे हैं वेऊ सुनैं मैं महादेव धर्मराज जे महामति हैं उनको नमस्कार कारिकै बडो रोमहर्ष करा-
वनहारो जो वहां देखो है ताहि कहौंगो ॥ १२ ॥ हे ब्राह्मणो ! पिताके शापसों
मैं संयमनी नाम जो यमराजकी पुरी है तामें पहुँचत भयो वहां मैंने धर्मराज देखे और स्तुतिनसों

पितुःशापादहंप्राप्तोविप्राःसंयमनींपुरीम् ॥ तत्रदृष्टोधर्मराजःस्तुतिभिस्तोषितो
मया ॥ १३ ॥ तुष्टेधर्मेमयाप्रोक्तंदर्शयस्वपुरींतव ॥ तदायमाज्ञयासर्वापुरीदृष्टाम
याद्विजाः ॥ १४ ॥ चित्रगुप्तोमयादृष्टःशुभाशुभविचारकः ॥ ततोवरंमयालब्धंवि
नयाविष्टचेतसा ॥ अजरामरताचैवव्याधिदुःखविनाशनम् ॥ १५ ॥

उनको संतुष्ट करत भयो ॥ १३ ॥ और जब धर्मराज संतुष्ट भये तब मैंने उनसों कहो कि, अपनी
पुरीको दिखाओ । हे ब्राह्मणो ! तब उनकी आज्ञा लेकै मैंने सब पुरी देखी ॥ १४ ॥ और शुभ
अशुभके विचार करनहारे चित्रगुप्तहू मैंने देखे और विनययुक्त चित्त होकै मैंने वरहू पायो कि, तू

अजर अमर हो और तेरे व्याधि तथा दुःख सब नाशको प्राप्त ॥ होयँ ॥ १५ ॥ और अपने पिताके प्रसाद ते फिरि यहां आय गयो और यमलोकको विस्तार फिरि मैं कहौंगो ॥ १६ ॥ कि वह प्रमाणमें एक हजार योजन चौडो लंबो है वाके चारि कोने हैं और चारि वाके द्वार हैं और नाना

आगतोहंपुनश्चैवापितुर्ममप्रसादतः ॥ पुनश्चाहंप्रवक्ष्यामियमलोकस्यविस्तृतिम् ॥
॥ १६ ॥ शतानिदशविस्तीर्णं योजनानांप्रमाणतः ॥ चतुरस्रंचतुर्द्वारंनानारत्नो-
पशोभितम् ॥१७॥ नानाजनसमाकीर्णं गीतवादित्रसंयुतम् ॥ धर्मराजपुरंदिव्यं
सप्तप्राकारवेष्टितम् ॥ १८ ॥ तस्यमध्येमहादिव्यंधर्मराजस्यमंदिरम् ॥ सर्वरत्न-
मयंवह्निविद्युद्बालार्कवर्चसम् ॥ १९ ॥

प्रकारके रत्नसों शोभित है ॥ १७ ॥ और नाना प्रकारके जे जन हैं तिन करिके समाकीर्ण कहिये भरो भयो है और जामें सदा गावनो बजावनो होय है और सात परकोटानसों घिरो भयो वह दिव्य यमराजको पुर है ॥ १८ ॥ वाके मध्यमें बहुतही सुन्दर धर्मराजको मंदिर है यह सब प्रकार-

के रत्ननसों बनो है और बिजली तथा बाल सूर्यके समान चमकि रहो है ॥ १९ ॥ और चित्र
विचित्र स्फटिक जो बिल्लौर है ताकी सीढियां बनी हैं और हीरानकी कुटीनसों शोभित है वामें भग
वान् धर्मराज जाकी उपमा नहीं होसकै है ऐसे सुंदर आसनपर विराजमान होय हैं ॥ २० ॥ सिंहा-

चित्रस्फाटिकसोपानंवज्रकुट्टिमशोभितम् ॥ तत्रासौभगवान्धर्म आसनेऽनुपमे
शुभे ॥ २० ॥ उपविष्टःसतांश्रेष्ठःसिंहासनगतोयमः॥सभायांधर्मराजंतंयोगिनःस
मुपासते ॥ २१॥ अप्सरोगणगन्धर्वाविद्याधरमहोरगाः॥प्रविशन्तींद्रदिग्द्वारे शिव
भक्तिपरायणाः ॥ २२ ॥ ग्रीष्मोदकप्रदातारोमाघेवह्निप्रदायकाः विश्रामयन्तिये
श्रांतानविप्रानध्वप्रपीडितान् ॥ २३ ॥

सनपर बैठेभये सज्जननमें श्रेष्ठ जो यमराज हैं तिनकी सभामें उनकी उपासनाको बडे २ योगी
आवैं हैं ॥ २१ ॥ अप्सरानको गण गंधर्व विद्याधर और बडे २ सर्प तथा शिवकी भक्तिमें परायण
ये सब पूर्व दिशाके द्वारमें प्रवेश करें हैं ॥ २२ ॥ गर्मीकी ऋतुमें जलके देनेहारे और माघ महीनामें

आगिसों तपावनहारे और जे मार्ग चलनेसों पीडित थके भये ब्राह्मणनको विश्राम देय हैं ॥ २३ ॥ और दान तथा धर्ममें रत हैं और क्रोध तथा लोभ करिकै रहित हैं और जे पिताकी भक्तिमें रत हैं तथा गुरुकी पूजामें सदा तत्पर हैं ॥ २४ ॥ हे ब्राह्मणनमें उत्तम । वे सब पूर्वके द्वारमें

दानधर्मरताश्चैवक्रोधलोभविवर्जिताः ॥ पितृभक्तिरतायेचगुरुपूजारताः सदा ॥ ॥ २४ ॥ पूर्वद्वारेणतेसर्वेप्रविशंतिद्विजोत्तमाः ॥ अतिथीन्पूजयेद्युर्येदेवब्राह्मणपूजकाः ॥ २५ ॥ ब्राह्मणानांचयेभक्तास्तीर्थस्नानरताश्चये ॥ वाराणस्यांगोगृहेच्चमृतास्तेयांतिचोत्तरे ॥२६ ॥ सत्यव्रतधरायेचानित्यंधर्मपरायणाः॥ परद्रव्येच्छाविहीनाः परानिन्दापराङ्मुखाः ॥ २७ ॥

प्रवेश करे हैं और जे अभ्यागतनको पूजे हैं और ब्राह्मणनको तथा देवतानको पूजे हैं ॥ २५ ॥ और ब्राह्मणनके जे भक्त हैं और जे तीर्थनके स्नानमें तत्पर हैं और काशीमें तथा गौके घरमें जे मरे हैं वे उत्तरके द्वारमें होके जाय हैं ॥ २६ ॥ और जे सत्यव्रतके धारण करनहारे हैं और नित्यही

धर्ममें परायण हैं और जे पराये द्रव्यकी इच्छा रहित हैं और पराई निंदाते विमुख हैं ॥ २८ ॥ और
जे महात्मा विष्णुके भक्त हैं और पराई स्त्रीनमें जे नपुंसक हैं और जे नित्य धर्मकी कथामें लगे
रहै हैं और पराई हिंसाते रहित हैं ॥ २८ ॥ ये सब निश्चय पश्चिमके द्वारमें होके सुखसों प्रवेश

विष्णुभक्तामहात्मानःपरस्त्रीषुनपुंसकाः॥नित्यंधर्मकथासक्ताः परहिंसाविवर्जिताः॥
॥ २८ ॥ एतेवैपश्चिमेद्वारेप्रविशंतिसुखान्विताः ॥ अन्येचदक्षिणेद्वारेप्रविशंतिनरा
ऽधमाः ॥ २९ ॥ सदानृतपराः क्रूरागुरुदेवाविदूषकाः पुराणवेदमीमांसामातृपि
तृविनिंदकाः ॥३०॥ हाहाकारोभवत्युग्रस्तस्मिन्द्वारेमयाश्रुतः॥ अन्धकारमयंघो
रंनानारोगनिषेवितम् ॥ ३१ ॥

करैं हैं अन्य नीच मनुष्य दक्षिणके द्वारमें होके भीतर घसैं हैं ॥ २९ ॥ जे सदा झूठ बोलैं हैं क्रूर हैं
और देवता तथा गुरुनको दूषण देय हैं तथा पुराण वेद मीमांसा और मातापिताके निंदक हैं
॥ ३० ॥ वा द्वारमें अति उग्र हाहाकार होय है मैंने सुनो है और अतिघोर अन्धकारमयी है और

और नाना प्रकारके रोगनकारिके सेवन कियो गयो है ॥ ३१ ॥ वहां पापी यमदूतन करिके पीडित होय हैं और मुद्गरनसों तथा दारुण लोहदंडनसों ताड़ना किये जाय हैं ॥ ३२ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटी-

तत्रैवपापकर्म्माणोयमदूतैःप्रपीडिताः ॥ मुद्गरैस्ताडयमानाश्चलोहदण्डैश्चदारुणैः ॥
॥ ३२ ॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७॥ नासिकेतउवाच ॥ ॥
तत्रैवनरकादृष्टानानापीडामयाद्विजाः ॥ कुम्भीपाकमुखाघोराघोरेयाह्येकविंशतिः
॥ १ ॥ तानहंसंप्रवक्ष्यामिशृणुध्वंद्विजसत्तमाः ॥ वदमानोपिनरकान्भयभीतो
भवाम्यहम् ॥ २ ॥

कायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ नासिकेत बोले ॥ कि हे द्विज ! वहांई मैंने नाना प्रकारकी पीडानके देनेहारे नरक देखे वे कुंभीपाक आदि महाघोर इकईस मुख्य हैं ॥ १ ॥ उनको मैं कहोंगो हे

ब्राह्मणो ! तुम सुनो जिन नरकनको कहतो भयो में भयभीत होउँ हों ॥ २ ॥ कुंभीपाक १ अवीचि २ महारौरव ३ रौरव ४ कक्षभेद ५ महाघोर रोमनको हर्षित करावनहारो दारुण ६ ॥ ३ ॥ और महाघोर तपन ७ और बडो अद्भुत आनिश्वास ८ तप्तांगार ९ तप्तभूमि १० तैसेही

कुम्भीपाकोह्यवीचिश्चमहारौरवरौरवौ ॥ कक्षभेदोमहाघोरोदारुणोलोमहर्षणः ॥
॥ ३ ॥ तपनश्चमहाघोरोऽनिश्वासोमहदद्भुतः ॥ तप्तांगारस्तप्तभूमिरसिपत्रवनंत
था ॥ ४ ॥ पूयपूर्णनदीचैवकूपश्चकृमिपूरितः ॥ विष्ठापूर्णस्तथाकूपःकर्णनासावि
कर्तनः ॥ ५ ॥ घृतपाकस्तथाचैवगुडपाकस्तथैवच ॥ संतप्तवालुकश्चैवतथैवक्षु
रवर्धकः ॥ ६ ॥

असिपत्र वन ११ ॥ ४ ॥ और पीवकी भरी भई नदी १२ और कृमिनसों भरो भयो कूप १३ और तैसेही विष्ठासों भरोभयो कूप १४ कर्ण नासाको विकर्त्तन १५ ॥ ५ ॥ तथा घृतपाक १६ तथा गुडपा-

क १७ संतप्त वालुक १८ तथा क्षुरधारक १९ ॥ ६ ॥ पर्वतारोहण २० शूलारोहण २१ और तपीभई सँडसीनसों नेत्रोंको उखाडनो ॥ ७ ॥ वहाँ मैंने ब्रह्महत्यारे गोके हत्यारे पिताके मारनेहारे और मित्रको विश्वास कराके जे मोहित होय हैं और जे गर्भके गिरावनेहारे हैं ॥ ८ ॥ और जे स्त्रीनके

पर्वतारोहणंचैवशूलारोहणमेवच ॥ तप्तसंदंशकाग्रेणनेत्रोत्पाटनमेवच ॥ ७ ॥ ब्रह्मघ्नास्तत्रवैदृष्टागोघ्नाश्चपितृघातकाः ॥ मित्रंविश्वास्यमुह्यन्तियेचगर्भनिपातिनः ॥ ८ ॥ स्त्रीणांदोषग्रहीतारस्तथैवगुरुतल्पगाः ॥ परनारीरतायेचपरद्रव्याभिलाषिणः ॥ ९ ॥ गोब्राह्मणपरित्यागीसाधुवृत्ताः स्त्रियस्तथा ॥ त्यजन्तिदूषकाराज्ञां परधर्मस्यनिन्दकाः ॥ १० ॥

दोषनको ग्रहण करें हैं और जे गुरुकी स्त्रीसों रमण करें हैं और जे पराई नारीसों रत हैं और जे पराये द्रव्यके लेनहारे हैं ॥ ९ ॥ और जे गौ तथा ब्राह्मणको परित्याग करे हैं और जे

पतिव्रता स्त्रीनको त्याग करैं हैं और जे राजानको दोष लगावैं हैं और जे पराये धर्मकी निंदा करैं हैं ॥ १० ॥ और जे झूंठी साक्षीके देनहारे हैं और जे क्रूर कर्मनके करनहारे हैं और जे काहूको दुःखी देखि प्रसन्न होय हैं और जे काहू सुखी देखि सदा दुःखित होय हैं ॥ ११ ॥ और

कूटसाक्षिप्रदातारः क्रूरकर्मरताश्चये ॥ दुःखितेहर्षकारीचसुखितेदुःखितः सदा ॥ ॥११॥ पापेषुरमतेनित्यंसत्यशौचविवर्जितः॥ सूचकःकलुषोनित्यंचौर्येणवोपजीवति ॥ १२ ॥ भूहर्तागृहहर्ताचदेवद्रव्यापहारकः ॥ दयाहीनादुराचारादानधर्मविवर्जिताः ॥ १३ ॥ महापापेनसंयुक्तास्तथायेबकवृत्तयः ॥ नश्रुतंचगुरोर्वाक्यंशास्त्रवार्तातथैव च ॥ १४ ॥

सत्य तथा शौच करि रहित जे सदा पापहीमें रमैं हैं और जो चुगली करैं हैं और जाको मन सदा कलुष रहैहै और जो चोरीकी जीविका करैं हैं ॥ १२ ॥ और जो काहूकी धरती तथा घर छीनि लेय हैं और जो देवतानके द्रव्यको हरिलेयँ हैं ॥ १३ ॥ और जे दुराचारी दयाहीन और

दान तथा धर्मसों रहित हैं और जिनको बड़ो पाप लगो है और जे बकवृत्ती हैं ॥ १४ ॥ और जिनने गुरुके वाक्य तथा शास्त्रकी वार्त्ता नहीं सुनी हैं और जाने पुराणको वाक्य नहीं सुनो है ॥ १५ ॥ और जे बड़े क्लेशको करें हैं और अपने धर्मसों रहित हैं ये सब तथा और बहुतेरे अपने

पुराणसंभवंवाक्यंयेनश्रुतंनकदाचन ॥ महाक्लेशकराश्चैवानिजधर्मविवर्जिताः ॥१५॥
एतेचान्येचबहवोमयादृष्टाह्यनेकशः॥ नरकेषुचसर्वेषुपच्यमानाःस्वदुष्कृतैः॥१६॥
इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ नासिकेतउवाच ॥ ॥ मर्त्यलोके
तुपापिष्ठाः पापाचारयुतानराः ॥ देहंत्यक्त्वापुनर्लब्ध्वायातनादेहमेवच ॥१॥ दूतैः
कृष्टाःपुरींयान्तिगृहीताइवमर्कटाः ॥ वैवस्वतस्यभोविप्राः सभायांसंस्थितस्यच ॥२॥

पापनसों नरकनमें दुःख भोगते भये देखे ॥ १६ ॥ इति श्रीमत्पंडितकेशवप्रसादकृतायांनासिकेतोपाख्यान भाषाटीकायामष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ नासिकेत बोले ॥ मर्त्यलोकमें पापी और पापही आचारमें लगेभये मनुष्य देहको छोडिके फिरि यातनाको देह पावे हैं ॥ १ ॥ और वे पापी पकरे भये बान-

रके समान यमके दूतनकरिके खेंचे गये वा पुरीको जाय हैं और हे विप्रो ! सभामें बैठे भये यम-
राजके समीप जाय हैं ॥ २ ॥ और हे द्विजोत्तमो ! धर्मराजकी सभामें जे स्थित हैं उनको सुनो,
कृष्णद्वैपायन, शृंगीऋषि और महामुनि भरद्वाज ॥ ३ ॥ दुर्वासा, गौतम, मरीचि और भृगु,

सभामध्येस्थितायेतुतान्शृणुध्वंद्विजोत्तमाः ॥ कृष्णद्वैपायनः शृंगीभरद्वाजोमहामु
निः ॥ ३ ॥ दुर्वासागौतमश्चैवमरीचिर्भृगुरेवच ॥ पिप्पलादःपुलस्त्यश्चपुलहः
सनकस्तथा ॥ ४ ॥ सुरभिःसुरदेवश्चवाल्मीकिश्चमहातपाः ॥ विश्वामित्रोव
सिष्ठश्चक्रतुर्दक्षोहरिस्तथा ॥ ५ ॥ एतेचान्येचबहवोमयादृष्टाह्यनेकशः ॥ यमे
नसहितास्सर्वेधर्माधर्मविचारणाम् ॥ ६ ॥

पिप्पलाद, पुलस्त्य, पुलह तथा सनक ॥ ४ ॥ और सुरभि, सुरदेव बडे तपस्वी वाल्मीकि
और विश्वामित्र, वसिष्ठ, क्रतु, दक्ष तथा हरि ॥ ५ ॥ ये सब तथा और बहुतसे मैं अनेक

देखे वेदके जाननेहारे और संदेहके दूरि करनेहारे ये सब यमके साथमें धर्म अधर्मको सदा विचार करें हैं ॥ ६ ॥ और पापी मनुष्यनके पापको निर्णय करिके यमके दूतन करि दंड दिये जाय हैं ॥ ७ ॥ ब्रह्महत्यारो जो पुरुष है वह कुंभिपाक नाम नरकमें पचायो जाय है गौके हत्यारे

कुर्वन्तिसततंविप्रावेदज्ञाःसंशयच्छिदः ॥ निर्णीयपापिनांपापंदंडयतेहियमानुगैः ॥ ॥ ७ ॥ ब्राह्मणघ्नश्चयःपापःकुम्भीपाकेसपच्यते ॥ गोघ्नश्चैवकृतघ्नश्चयेचस्त्रीगर्भपातिनः ॥ ८ ॥ तैलयन्त्रेणपीड्यन्तेयमदूतैर्भयंकरैः ॥ स्वामिद्रोहरतायेचगुरुद्रोहकराश्चये ॥ ९ ॥

और कृतघ्नी तथा जे स्त्रीनके गर्भके गिरावनेहारे हैं ॥ ८ ॥ वे भयंकर यमदूतनकरिके तेलके यंत्रमें पीडा दिये जाय हैं अर्थात् तेलकोल्हूमें पेरे जाय हैं और जे स्वामीके द्रोहमें रत हैं और

गुरुके द्रोही हैं ॥ ९ ॥ और जे विश्वासघाती हैं वे आरानसों दो फाँक करे जांय हैं और जे जीव-
नको विषके देनहारे हैं वे अग्निमें भूंजे जाय हैं ॥ १० ॥ और जे क्षेत्रकी वृत्तिके हरनेहारे हैं
और जे पराई स्त्रीसों भोग करनेहारे हैं और जे जीवनकी हिंसा करैं हैं वे गुडपाक नाम नरकमें

विश्वासघातकायेचच्छिद्यन्तेक्रकचैर्द्विधा ॥ गरदायेचजन्तूनांपच्यन्तेह्यनलेषुते॥
॥ १० ॥ क्षेत्रवृत्तिहरायेचपरदाररताश्चये ॥ गुडपाकेषुपच्यन्तेयेचजीवविहिंस
काः ॥ ११ ॥ परद्रव्येष्वभिध्यानंमनसानिष्टचिंतनम् ॥ वितथाभिनिवेश
श्चमानसंत्रिविधंस्मृतम् ॥ १२ ॥ पारुष्यमनृतंचैवपैशुन्यंचापिसर्वशः ॥ असंब
न्धःप्रलापश्चवाङ्मयंस्याच्चतुर्विधम् ॥ १३ ॥

पचाये जाय हैं ॥ ११ ॥ पराये द्रव्यको चिंतवन करनो और मनमें अनिष्टको विचारनो और
झूँठको आग्रह करनो यह मानसी पाप तीनि प्रकारको है ॥ १२ ॥ कठोरपन झूँठ और सर्वत्र
चुगली करनो और विना संबंधको बकनो यह चार प्रकारको वाङ्मय पाप होय हैं ॥ १३ ॥

और नहीं दिये भयोंको लेने और विना विधानके हिंसा करनी और पराई स्त्रीकी सेवा करनी
यह तीनि प्रकारको कायिक पाप कहो है ॥ १४ ॥ या प्रकार मनुकरि कहे भये दश प्रकारके
पापोंको जो करै है द्विज ! वह बडे घोर कालसूत्र नाम नरकमें पचायो जाय है ॥ १५ ॥ जो

अदत्तानामुपादानंहिंसाचैवाविधानतः ॥ परदारोपसेवाचकायिकंत्रिविधं
स्मृतम् ॥ १४ ॥ एवंपापंदशविधंमनुनोक्तंकरोतियः ॥ पच्यतेनरकेघोरेकाल
मूत्रेसतुद्विजाः ॥ १५ ॥ अभक्ष्यंभक्षयेद्यस्तुमादिरांपिबतेचयः ॥ अगम्यागमनंचैव
गुरुनिन्दारतोनरः ॥ १६ ॥ एतेवैपापिनः सर्वेदृष्टावैवस्वतेपुरे ॥ यातनाभिः पीडय
मानानारकीभिरनेकधा ॥ १७ ॥

नर अभक्ष्यको भक्षण करै है और जो मदिरा पीवै है तथा अगम्य जे पुत्री भगिनी आदि हैं तिनमें
गमन करै है और गुरुकी निंदा करै है ॥ १६ ॥ ये सब पापी मैंने यमलोकमें देखे कि, नरककी

भा० टी०
अ० ६

यातानानसों अनेक भाँति पीडा दिये जाय हैं ॥ १७ ॥ जो पुरुष छेंकुरु बड ढाक इनको वृथा काटे है वाको दूत धर्मराजके लोकमें छेदन करे हैं ॥ १८ ॥ जे पापात्मा अल्पबुद्धि मनुष्य वैश्वदेवके अंतमें आये भये भूंखे अभ्यागतनको क्रूर दृष्टिसों देखे हैं ॥ १९ ॥ उनकी छाती पर पाँव धरि दोनों आखें निकाली जाती हैं ॥ २० ॥ और जे सदा पाप ही करैं हैं वे निश्चय करिके रौरवनरकमें डारे जाय हैं और जे मंत्रके विना भोजन

शमीन्यग्रोधपालाशाच्छेदनंकुर्वतेवृथा ॥ तस्यदूतैर्धर्मलोकेछेदपीडाप्रवर्तते ॥ १८ ॥
अतिथीन्वैश्वदेवान्तेह्यागतान्क्षुधयातुरान् ॥ वीक्षन्तेक्रूरदृग्भिर्येपापिनोऽत्यल्प
बुद्धयः ॥ १९ ॥ तेषामुद्ध्रियतेनात्रयुग्मंदत्त्वापदंहृदि ॥ २० ॥ सदापापरताये
तुक्षिप्यन्तेरौरवेध्रुवम् ॥ येतुनिर्मन्त्रभोक्तारोवैश्वदेवविवर्जिताः ॥ २१ ॥

॥४१॥

करैं हैं और वैश्वदेव कर्मसों रहित हैं ॥ २१ ॥ उनको मैंने विष्ठाके कूपनमें नीचको झुके हैं मुख जिनके ऐसे परेभये देखे हैं और जे धर्मशास्त्रनको दूषित करें हैं और तीर्थनकी जो निंदा करैं हैं ॥ २२ ॥ और आपको अच्छा समझै हैं और अहंकारी हैं वे शिलाके पीठिपर पीसे जाय हैं

विष्ठाकूपेषुपतितामयादृष्टाअधोमुखाः॥ दूषयेद्धर्मशास्त्राणितीर्थनिन्दांकरोतियः ॥ ॥२२॥आत्मसंभावितःस्तब्धः शिलापृष्ठेषुपिष्यते॥ एतेवैपापिनोदृष्टायमलोकेसहस्रशः॥२३॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेपापियातनावर्णनंनामनवमोऽध्यायः॥९॥ नासिकेतउवाच ॥ अतःपरंमयादृष्टंमहतांरोमहर्षणम् ॥ अद्भुतंतुशृणुध्वंभो मुनयोयेसमागताः ॥ १ ॥

ऐसे पापी मैंने यमलोकमें हजारन देखे हैं ॥ २३ ॥ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां पापियातनावर्णनंनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ नासिकेत बोले ॥ यांते परे महज्जनोंके रोमांच करावनहारो जो अद्भुत मैंने

देखा है ताहि आये भये जे आप मुनीश्वर हैं वे सुनो ॥ १ ॥ जलतीभई अग्निके समान है कांति जिनकी ऐसे नरकमें मैंने देखे जिनमें यम दूतनकरिकै पापी अनेक प्रकारसों जराये जायहैं ॥ २ ॥ ऊपरको जिनके केश और बडी कायावाले और पैंनी हैं डाढैं जिनकी और

नरकाश्चमयादृष्टाज्वलदग्निसमप्रभाः ॥ पापिनोयत्रदह्यन्तेयमदूतैरनेकधा ॥ २ ॥ ऊर्ध्वकेशामहाकायास्तीक्ष्णदंष्ट्राभयंकराः ॥ वक्रतीक्ष्णनखाग्राश्चसूचीवक्त्राभयंकराः ॥३॥ त्रासकाःसर्वपापानांदूरदर्शनचक्षुषः ॥ दूरश्रवणविज्ञानादीर्घकायामहाबलाः ॥ ४ ॥ केशग्रहेणपापिष्ठान्संगृह्यव्यथयान्तिच ॥ विषयासक्तमनसांसुखंचक्षणमेवहि ॥ ५ ॥

भयानक और टेढी तथा पैंनी हैं नखोंकी नोंकें जिनकी और सुईके समान हैं मुख जिनके ऐसे भयानक ॥ ३ ॥ सब पापी मनुष्यनके त्रास देनेहारे दूरलौं देखनहारे हैं नेत्र जिनके दूरलौं सुननेको है ज्ञान जिनको और दीर्घ काहिये लंबो है देह जिनको और बडे बलवान् ॥ ४ ॥ ऐसे दूत केश पकडकर

पाप करनहारे पापी मनुष्यके केशनको पकडके दुःख देय हैं और जिनके मन विषयनमें लगिरहे हैं उनके मुखनको भंजन करिके पीडा देय हैं ॥ ५ ॥ हे द्विजो ! कल्पके अंतलौं तप्त खंभोंमें बांधनेको दुःख होय है और जाने जो पाप कियो है वह वा शुभ अशुभ कर्मको भोगे है ॥ ६ ॥

भवेद्दुःखंचकल्पान्तंतप्तसूर्मीमयंद्विजाः॥येनयद्यत्कृतंकर्मसतद्भुंक्तेशुभाशुभम्॥६॥
एवंतत्रमयादृष्टाःपीडाःकर्मसमुद्भवाः॥हन्यमानानीयमानामयादृष्टाह्यनेकशः॥७॥
तत्रकैश्चिद्यमदूतैरसिपत्रैश्चताडिताः ॥ कूटसाक्षिप्रदातारःकूटकर्मरताश्चये ॥८॥

ऐसे वहाँ मैंने कर्मनसों उत्पन्न भई पीडा देखी और मैंने मारे जाते तथा खेंचे जाते अनेक देखे ॥ ७ ॥ वहाँ कोई यमके दूतन करि असिपत्रनसों ताडन किये जाय हैं और झूँठी गवाहीके देने-

हार झूठे कर्मोंमें तत्पर मनुष्य ॥ ८ ॥ कुल्हाडीनसों काटिकै घोर नरकमें पहुंचाये जाय हैं और प्राणिनके जे मारनेहार हैं वे यमके दूतनकरि पीडा दिये जाय हैं और प्राणिनके दुःख देनहारे हैं वे रोगनके कष्टसों पीडित होय हैं ॥ ९ ॥ घीको चुरावनहारो घीमें डारो जाय है और तेलको

नीयन्तेनरकेघोरेशिरश्छित्त्वाकुठारकैः ॥ प्राणिनांघातकाश्चैवपीडितायमकिंकरैः ॥
दुःखदाःप्राणिनांयेतुव्याधिकष्टेनपीडिताः ॥ ९ ॥ घृतचौरोघृतेक्षिप्तस्तैलेतैलापहा
रकः ॥ दुग्धचौरोभवेद्दुग्धेदिव्यवर्षसहस्रकम् ॥ १० ॥ देवतार्चनसेवायांभक्तिभाव
विवर्जिताः ॥ दुष्टकर्मरतायेतुपाशैर्बद्धाःकदर्थिनः ॥ ११ ॥ वाटिकाच्छेदितायेनदेव
प्रासादभंजकः ॥ कृतंकर्महतंयेनपराग्नंद्विजपुङ्गवाः ॥ १२ ॥

चुरावनेहारो तेलमें डारो जाय है और दूधको चुरावनेहारो दिव्य हजार वर्षलों दूधमें पडो रहे है ॥ १० ॥ देवताके अर्चन और सेवामें जे भक्तिभावसे रहित होय हैं और जे दुष्टकर्मनमें सदा लगेरहे हैं वे पाशनमें नाधिकै कदर्थित करे जाय हैं ॥ ११ ॥ और जे फुलवारीके काटनहारे हैं

तथा देवताके मंदिरको फोरनहारे हैं और हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो ! जे करेभये कर्मको चुराते हैं तथा पराये अन्नको चुराते हैं ॥ १२ ॥ वे यमके दूतनकरि मारे भये बडी करुणासों बहुत रोवैं हैं और जे सब जीवनकी दयासों हीन हैं और निष्ठुर तथा क्रूरमनवाले हैं ॥ १२ ॥ वे दूतनकरि तबताईं नरकमें

किंकरैर्वध्यमानास्तेरुदंतिकरुणंबहु ॥ सर्वजीवदयाहीनानिष्ठुराःक्रूरमानसाः ॥ १३ ॥
नरकेपीडितादूतैर्यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ मार्गेवृच्छेदिनोवृक्षाविकीर्णाःकंटकाःपथि ॥
॥ १४ ॥ भवेत्तेषांवधोदूतैर्वज्रदण्डैश्चताडनम् ॥ भोजनंविषसंमिश्रंयोदद्यात्प्राणि
नांहृदि ॥ १५ ॥ तप्तलोहंमुखेतस्यदीयतेयमकिंकरैः ॥ पतिंसंत्यज्ययानारीप
रपुंसिरताभवेत् ॥ १६ ॥

पीडा दिये जाय हैं जबलौं सूर्य चंद्रमा रहैंगे और जे मार्गमें वृक्षनको काटैं हैं और मार्गमें काँटे फैलावैं हैं ॥ १४ ॥ उनको दूत वज्रके दंडनसों ताडन करैं हैं और जो विष मिलायके प्राणिनको भोजन देय हैं ॥ १५ ॥ वाको मुखमें यमके दूत तप्त लोहको डारैं हैं और जो नारी अपने पतिको

छोडिके पराये पतिसों रति करै है ॥ १६ ॥ वा दुष्ट नारीको भयानक मुद्गरनसों ताडन करिके भयंकर यमके दूत दारुण दुःख देय हैं ॥ १७ ॥ और जलती आगिसों भरे भये लोहके खंभनसों बांधिके तपाये जाय हैं और जा पापीने अगम्यासों गमन कियो है ॥ १८ ॥ और जो सब शास्त्र-

तांनारींनिरयेदुष्टांताडितांभीममुद्गरैः ॥ दारुणैर्दीयतेदुःखंयमदूतैर्भयंकरैः ॥ १७॥
प्रज्वलद्वह्निसंपूर्णेलोहस्तंभेप्रतापनम् ॥ अगम्यागमनंयेनकृतंवैपापकारिणा ॥ १८ ॥
स्वगोत्रांमनसायातोयमलोकेसदुःखभाक् ॥ नैवपश्यतिदोषंस्वंपरदोषप्रकाशयेत् ॥
॥ १९ ॥ पच्यतेह्यन्धकूपेसपरकार्यविभेदकः ॥ दूषयेत्सर्वशास्त्राणिदेवतांब्राह्मणं
गुरुम् ॥ २० ॥

नको दूषित करै है और जो अपने दोषको नही देखे है पराये दोषको प्रगट करै है ॥ १९ ॥ और पराये कामको बिगारनेहारो वह अंधकूपनाम नरकमें पचायो जाय है और जो सब शास्त्रनको

दूषित करे है और देवता गुरु तथा ब्राह्मणको दूषित करै है ॥ २० ॥ वाकी जीभ काटी जाय है मैंने बहुतेरे देखे हैं और जो रत्नकी वस्तु और सोनेके गहने चुरावै हैं ॥ २१ ॥ और जो मूंगनको तथा हीरानको चुरावै हैं वह कुंभीपाक नाम नरकमें पचायो जाय है और जो खल बालकनको धोखा देके एकांतमें

जिह्वाच्छेदोभवेत्तस्यमयादृष्टोह्यनेकधा॥ योहरेद्रत्नवस्तूनिसुवर्णाभरणानिच ॥२१॥
प्रवालवज्रहर्तायोकुम्भीपाकेसपच्यते ॥ एकान्तेमिष्टमश्नातिबालकंवञ्चयन्खलः॥
॥२२॥स्वमांसंभक्ष्यमाणः समयादृष्टोद्विजोत्तमाः॥एतेपापामयादृष्टायमलोकेनरा
धमाः॥२३॥इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेनारकिकर्मवर्णनंनामदशमोऽध्यायः॥१०॥

मीठो खाय है ॥ २२ ॥ हे द्विजोत्तमो ! वाको मैंने अपनो मांस खातो भयो देखो है ऐसे नरनमें अधम पापी यमलोकमें देखे हैं ॥ २३ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुरत्त नयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां कृतकर्मवर्णनंनाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

॥ नासिकेत बोले ॥ या पीछे मैंने जो देखो सो तुमसों कहोंगो बालक, स्वामी, पंगा, वृद्ध ब्राह्मण और कन्या ॥ १ ॥ इन सबनको छोडिके जो पहले खाय हैं और जो पतिव्रता पतिसों पहले खाय हैं ये बहुतसे शाल्मलीवृक्षमें स्थिर मैंने देखे ॥ २ ॥ वह वृक्ष मैंने देखो जरतीभई आ-

नासिकेतउवाच ॥ अतःपरंमयादृष्टंयुष्मभ्यंकथयाम्यहम् ॥ बालकंस्वामिनंपंगुंवृद्धंविप्रंचकन्यकाम् ॥१॥ त्यक्त्वाभुनक्तिपूर्वंयोभर्तारंचपतिव्रता॥एतेशाल्मलिवृक्षस्थामयादृष्टाह्यनेकशः ॥ २ ॥ सतुवृक्षोमयादृष्टोज्वलदग्निसमप्रभः ॥ पञ्चयोजनविस्तीर्णोदशयोजनमुच्छ्रितः ॥ ३ ॥ तस्मिन्बद्धाः पापिनस्तेताड्यन्तेयमकिंकरैः ॥ ताडितावज्रदण्डैश्चमुद्गरैर्भिन्नमस्तकाः ॥ ४ ॥

गिके समान वाकी कांति है पांच योजन अर्थात् बीस कोसको वाको विस्तार है और दश योजन अर्थात् चालीस कोसकी वाकी ऊँचाई है ॥ ३ ॥ तामें बँधेभये पापी यमदूतनकरि ताडना किये

जाय हैं वे वज्रके दंडनसों ताडना करे जाय हैं और मुद्गरनसों उनके माथे फोरे जाय हैं ॥ ४ ॥ फिरि वहां मैंने तप्तवालुक नाम नरक देखो वह जरतीभई अग्निके समान है वामें पापी जराये जाय हैं ॥ ५ ॥ वामें हाथ पाँव जिनके बँधे ऐसे पापी पीडा दिये जाय हैं और जे आत्मघात करें

पुनस्तत्रमयादृष्टोनरकस्तप्तवालुकः ॥ प्रज्वलद्वह्निसदृशोदह्यन्तेतत्रपापिनः॥ ५ ॥ क्षुधयात्रपीड्यन्तेबद्धहस्तपदानराः ॥ आत्मघातंप्रकुर्वन्तिसत्यधर्मविवर्जिताः ॥ ॥ ६ ॥ तस्मिँल्लोकेमयादृष्टाः पतितास्तप्तवालुके ॥ स्वधर्मंचपरित्यज्यपरधर्मरता नराः ॥ ७ ॥ नकृतंजलदानंयैरन्नदानंचनोकृतम् ॥ नतोपितविप्रगणास्तथाना ग्निमुखेहुतम् ॥ ८ ॥

हैं और सत्य धर्मसों रहित हैं ॥ ६ ॥ उनको वा लोकमें मैंने तप्तवालुक नाम नरकमें परेभये देखे और जे अपने धर्मको छोडिके पराये धर्ममें जाये हैं ॥ ७ ॥ और जिनने जलको दान

तथा अन्नको दान नहीं कियो है और न ब्राह्मणनके गणको संतुष्ट कियो है और न
अग्निके मुखमें होम कियो है ॥ ८ ॥ और जे पुरुष गृहस्थीमें रहिके पंचयज्ञनको नहीं करै हैं
उनकी वा स्थानमें फिरि दूसरी देह होजाय है ॥ ९ ॥ वे मनुष्य अपनेही कर्मनसों कीरनकी

गृहेस्थितायेपुरुषाः पञ्चयज्ञविवर्जिताः ॥ तस्मिन्स्थानेमयादृष्टंपुनर्देहान्तरंभ
वेत् ॥ ९ ॥ कृमियोनिषुजायन्तेनराः स्वेनैवकर्मणा॥ कूटसाक्ष्यंवदेद्यस्तुकूटमानं
करोतियः ॥ १० ॥ सोऽमुत्रस्वकृतेनैवदह्यतेवायुवह्निना ॥ विप्रांश्चदेवतांश्चै
वगङ्गादिसरितस्तथा ॥ ११ ॥ नमन्यतेनरोयस्तुनरकेपीड्यतेभृशम् ॥ निर्दया-
मानमारूढाजीवहिंसापरायणाः ॥ १२ ॥

योनिमें उत्पन्न होय है और जो झूँठी गवाही देय हैं तथा घाटि तौलै हैं ॥ १० ॥ वह परलोकमें
अपने करेभये कर्मनसों पवन और अग्नि करिके जराये जाय हैं और जे नर ब्राह्मणनको और
देवतानको तथा गंगा आदि नदीनको ॥ ११ ॥ नही मानें हैं वे नरकमें अत्यंत पीडित होय हैं

और जे निर्दयी हैं तथा मानी हैं और जीवहिंसामें परायण हैं ॥ १२ ॥ वे परलोकमें निश्चय यमके किंकरनकरि पीडित करे जाय हैं और जे अधम मनुष्य मातृष्वसा जो मावसी है ताके पुत्रनको तथा गुरुके पुत्रनको ॥ १३ ॥ भाई करके नहीं मानैं हैं वे दंड जिनके हाथमें ऐसे महाघोर यमके

तेमुत्रनियतंघोरैः पीड्यन्तेयमकिंकरैः ॥ मातृष्वस्सुतांश्चैवगुरोः पुत्रान्नराधमाः ॥
॥ १३ ॥ भ्रातृत्वेननमन्यन्तेपीडयन्तेमुत्रतेभृशम्॥ दण्डहस्तैर्महाघोरैर्वधबन्धा
दिभिस्तथा ॥ एतत्सर्वंमयादृष्टंद्विजाःकौतूहलंमहत् ॥ १४ ॥ इतिश्रीनासिकेतो
पाख्यानेनारकिवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

दूतन करिकै वध बंधन आदिसों परलोकमें बहुतही पीडा दिये जांय हैं हे ब्राह्मणो ! मैंने यह सब बडो कौतुक देखो ॥ १४ ॥ इतिश्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां

नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायांनरकवर्णनंनामएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ नासिकेत बोले ॥
या पीछे जो मैंने यमको शासन देखो है ताहि कहौंगो वा दक्षिणके द्वारमें पापीजन क्लेशको पावें
हैं ॥ १ ॥ वहां नानाप्रकारके भयानक यमके दूत देखे जिनकी लंबी देह लंबे ओष्ठ और ऊपरको

नासिकेतउवाच ॥ ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामियद्दृष्टंयमशासनम् ॥ तस्मिन्वै
दक्षिणेद्वारेक्लिश्यन्तेपापिनोजनाः ॥ १॥ तत्रनानाविधाद्दृष्टादूतायेवैविभीषणाः ॥
दीर्घदेहाश्चलम्बोष्ठाऊर्ध्वकेशाभयंकराः ॥ २ ॥ वराहसदृशाकाराः कृष्णवर्णाः
कृशोदराः ॥ अपरेसिंहपादाश्चव्याघ्ररूपास्तथापरे ॥ ३ ॥ मार्जाररूपिणश्चान्ये
तत्रैवास्तुतथापरे ॥ सर्पवृश्चिकरूपाश्चरौद्राभरणभूषिताः ॥ ४ ॥

केश ऐसे भयावने ॥ २ ॥ उनमें काहूको सुअरको आकार है काले रंगके हैं पेट सूखोसो है और
उनके पाँय सिंहकेसे हैं और कोऊ व्याघ्रके रूपमें हैं ॥ ३ ॥ कोऊ बिलावके रूपमें हैं और काहूके

नेत्र बिलावकेसे हैं और कोऊ साँप तथा बिच्छूके रूपमें हैं और भयानक आभरणनसों भूषित हैं ॥ ४ ॥ कोऊ त्रिशूलको लिये हैं और कोऊ दंड तथा मुद्गरनको लिये हैं और कोऊ खड्ग तथा खेटको धारण किये हैं और कोऊ भुशुंडी तथा परिघोंको लिये हैं ॥ ५ ॥ कोऊ भिंदिपाल जो

त्रिशूलधारिणः केचिद्दण्डमुद्गरधारिणः ॥ खड्गखेटधराः केचिद्भुशुण्डीपरिघायुधाः ॥ ५ ॥ भिंदिपालधराः केचित्केचिन्मुसलपाणयः ॥ कराळास्याः शक्तिधराः केचित्परशुपाणयः ॥ ६ ॥ निर्मितायमराजेनपापानुग्रहकारिणा ॥ नानायुधधरादूतास्ताडयन्तिदुरात्मनः ॥ ७ ॥

गोफन है ताहि लिये हैं और कोऊ मूशल लिये हैं और कराल मुखके हैं और कोऊ शक्ति लिये हैं और कोऊ फरसाको धारण किये हैं ॥ ६ ॥ पापीन पर अनुग्रह करनहारे जे यमराज हैं तिन करिके बनाये गये हैं और नानाप्रकारके शस्त्रनके धारण करनेहारे दूत दुष्टनकी ताडना करें हैं ॥ ७ ॥

पापकर्मरतान्क्रूरांस्तथैवकलहप्रियान् ॥ क्षिपन्तियमदूतास्तेह्यसिपत्रवनान्तरे ॥ ८ ॥ पतिताः कालसूत्रेषुमयादृष्टाश्चकेचन ॥ जीवन्तिम्लेच्छवृत्त्यायेचौरकर्मोपजीविनः ॥ ९ ॥ पूर्वकर्मभिरेतेवैसहन्तेबहुयातनाः ॥ भक्षयन्तिचतान्श्वानः काकगृध्राःकुषन्तिच ॥ १० ॥ तत्रस्थानेमयादृष्टामनुष्याबहुपीडिताः ॥ रौद्ररूपैर्महाघोरैर्यमदूतैरितस्ततः ॥ ११ ॥ एकस्मिन्समयेदृष्टोमयावैवस्वतोयमः ॥ महिषासनमारूढोमहाबलपराक्रमः ॥ १२ ॥

पाप कर्ममें जे रत हैं और जे क्रूर हैं तथा जिनको कलह प्यारो है ऐसे पापी मनुष्यनको यमदूत असिपत्रवननाम नरकमें डारैं हैं ॥ ८ ॥ और जे म्लेच्छकी वृत्तिसों जीविका करैं हैं और जे चोरीके कर्मसों जीविका करैं हैं ॥ ९ ॥ ये पहले जन्मके कर्मनसों बहुतसी यातना सहैं हैं और उनको कुत्ते खाय हैं और कौआ तथा गीध चोंथैं हैं ॥ १० ॥ वा स्थानमें मैंने भयंकररूप और महाघोर यमदूतनकारि बहुत पीडित मनुष्य देखे ॥ ११ ॥ एक समय मैंने भैंसेके आसन पर बैठे भये

महाबल तथा पराक्रमी वैवस्वत यमको देखो ॥ १२ ॥ हे द्विजो । कुंडलनसों शोभित श्रीमान् और दंड तथा फाँसीको लिये भये बुद्धिसों शोभायमान बडो है शरीर जाको और दूत करिकै वेष्टित है ॥ १३ ॥ क्रोधसे लाल हैं नेत्र जिनके ऐसे यम नरकनको देखते भये आये तब सब दूतगण उनको नमस्कार करिकै

कुण्डलालंकृतःश्रीमान्दण्डपाशधरोद्विजाः ॥ बुद्धिशालीमहाकायोदूतैश्चपरिवारितः ॥ १३ ॥ आगतोनरकान्वीक्षन्क्रोधरक्तान्तलोचनः ॥ तदादूतगणाःसर्वेनत्वातस्याग्रतः स्थिताः॥ १४ ॥ यमउवाच ॥ शृणुध्वं वचनं दूताः शीघ्रं कुरुत माचिरम् ॥ तिष्ठन्तिराक्षसाघोराभूतलेधर्मवर्जिताः ॥ १५ ॥

आगे ठाढे होत भये ॥ १४ ॥ यम बोले ॥ हे दूतो । मेरो वचन सुनो और शीघ्र करो देरी न लगे पृथिवीमें धर्मरहित घोर राक्षस स्थित हैं ॥ १५ ॥

उनको शीघ्र लाओ और उन बलवाननसों डरनो न चाहिये धर्मराजके ऐसे कहने पै दूत वेगसों महीतलमें आवत भये ॥ १६ ॥ और सब दूत मिलिकै जहाँ वे दानव स्थित हैं वहां जात भये और वहां उनके साथ भालो मुद्गर तथा प्रास नाम शस्त्रसों युद्ध होत भयो ॥ १७ ॥

तानानयध्वंत्वरितंनभेतव्यंमहाबलान् ॥ इत्युक्तोधर्मराजेनवेगेनैवमहीतले ॥ १६ ॥ गतास्तोमिलिताःसर्वे यत्रतेदानवाः स्थिताः ॥ तत्रतैरभवद्युद्धंप्रासमुद्गरतोमरैः ॥ ॥ १७ ॥ सायकैर्लोहदण्डैश्चखड्गैःशूलैर्भुशुण्डिभिः ॥ एवंतेषामभूद्युद्धंमहद्घोरोमहर्षणम् ॥ १८ ॥ किंकरैःकालपाशेनाजितास्तेराक्षसारणे ॥ पाशैर्बद्धान्महादैत्यानानिन्युस्तेयमान्तिकम् ॥ १९ ॥

और तीर लोहके दंडे तरवार त्रिशूल भुशुंडी इत्यादि अस्त्र शस्त्रन करिकै उन दानवन तथा दूतनसों रोमांचित करनहारो बडो युद्ध होत भयो ॥ १८ ॥ यमके किंकरनकरिकै वे राक्षस

रणमें कालपाश करिके जीत गये और पाशनसों बंधे भये उन राक्षसनको वे दूत यमके समीप लावत भये ॥ १९ ॥ धर्मराजहू उनको देखिकै बहुतही घोर होजात भये और अपने दूतनको आज्ञा देत भये कि, इनको तुम चित्रगुप्तके घर ले जाओ ॥ २० ॥ और चित्रगुप्तने उन

धर्मराजश्चतान्दृष्ट्वामहाघोरतरोभवत् ॥ स्वान्दूतान्प्रत्युवाचाथनीयन्तांचित्रवेश्मनि॥२०॥ चित्रगुप्तस्तुतान्सर्वान्कृमिकुण्डेष्वन्यचिक्षिपत् ॥ एवंविप्राजगत्सर्वं कालपाशवशंभवेत् ॥ २१ ॥ युवानोबालकाः केचिद्वृद्धावैगर्भगाः परे ॥ एवंभूतानिसर्वाणिकालस्यवशवर्तिनः ॥ २२ ॥ येचपापेप्रवर्त्तन्तेधर्महीनाश्चमानवाः ॥ इहलोकेचदृश्यंतेदुःखदारिद्र्यपूरिताः ॥ २३ ॥

सबनको कृमि जे कीडे हैं तिनके कुंडनमें डरवाय दिये हे विप्रो । या प्रकार सब जगत् कालपाशके वशमें होय है ॥ २१ ॥ और कोई जवान कोई बालक कोई वृद्ध तथा और जे कोई गर्भमें स्थित हैं वे सब या प्रकार कालके वशमें हैं ॥ २२ ॥ और जे धर्महीन मनुष्य पापमें प्रवृत्त होय हैं

वे याहू लोकमें दुःख तथा दरिद्रता कारि युक्त होयहै ॥ २३ ॥ और कियो भयो शुभ अशुभ कर्म अवश्यही भोगनो परे है ॥ २४ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्म-द्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ नासिकेत बोले ॥

अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् ॥ २४ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेयमशासनादिनिरूपणंनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२॥ ॥ नासिकेतउवाच ॥ तत्रस्थानेमयादृष्टाधार्मिणश्चद्विजोत्तमाः ॥ फलंकृतस्यभोक्तव्यंधर्मराजस्यचाज्ञया ॥ १ ॥ तत्रस्थानेमहानद्योमयादृष्टामनोहराः ॥ शर्करादधिदुग्धाज्यमधूनांच महानदी ॥ २ ॥

और वा स्थानमें हे द्विजोत्तमो ! मैंने अधर्मी देखे और धर्मराजकी आज्ञासों किये भयेको फल भोगनो आवश्यक है ॥ १ ॥ और वा स्थानमें मैंने मनोहर महानदी देखी और शर्करा दही

दूध घी तथा मधु जो शहद है ताकी महानदी देखी ॥ २ ॥ पूर्व तथा उत्तर दिशाके मध्यमें मैंने धर्मात्मा देखे वे सुंदर वस्त्र धारण करे भये और दिव्यही आभरणनसों भूषित हैं ॥ ३ ॥ सुवर्णकी कुंडल धारण किये भये हैं और हार केयूर जे बाजू हैं तिनोंके धारण करन हारे और वीणा तथा वंशीके शब्दनकरि

पूर्वोत्तरदिशोर्मध्येमयादृष्टाश्चधार्मिकाः ॥ दिव्याम्बरधरारम्यादिव्याभरणभूषिताः ॥ ३ ॥ हेमकुण्डलशोभाढ्याहारकेयूरधारिणः ॥ वीणावंशनिनादाढ्याश्चामरैरुपशोभिताः ॥ ४ ॥ उच्चासनसमारूढाह्यप्सरोभिरुपासिताः ॥ दिव्यस्रग्गन्धलिप्तांगाविविधैरुत्सवैर्वृताः ॥ ५ ॥

युक्त है और चमरनसों शोभित है ॥ ४ ॥ ऊँचे आसनपर बैठे हैं और अप्सरा उनकी सेवा करि रही हैं दिव्य माला और दिव्यही हरिचंदन आदिके लेपनसों उनके अंग सुगंधित और नाना

प्रकारके जे उत्सव हैं तिन करिकै युक्त हैं ॥ ५ ॥ तपाये भये सुवर्णके वर्णके समान हैं वर्ण जिनको ऐसे मुकुटनसों शोभित या प्रकारके जे धर्मात्मा हैं वे यमके लोकमें निवास करै हैं ॥ ६ ॥ और जिन पुरुषनने विप्रनमें जे मुख्य हैं तिनके लिये श्रद्धासों नाना प्रकारके दानदिये हैं अर्थात्

ततकाञ्चनवर्णाभामुकुटैरुपशोभिताः ॥ एवंविधाधार्मिकास्तेयमलोकेसमासते ॥ ६ ॥ श्रद्धयाविप्रमुख्येभ्योदत्तानिविविधानिच ॥ अन्नदानानिवस्त्राणिहिरण्यंभक्ष्यभोजनम् ॥ ७ ॥ तिलदानंभूमिदानंकृतं यैर्धार्मिकैर्नरैः ॥ तेलभन्तेऽखिलंसौख्यं दानधर्मप्रभावतः ॥ ८ ॥ वर्णाश्रमस्थायेलोकानिजधर्मस्यपालकाः ॥ आगतान्वैश्वदेवान्तेह्यतिथीन्पूजयन्तिये ॥ ९ ॥

अन्नदान वस्त्रनको दान सुवर्ण भक्ष्य वस्तु तथा भोजनको दान कियो है ॥ ॥ ७ ॥ और तिलदान तथा भूमिको दान जिन धर्म्मात्मा मनुष्यन करिकै कियो गयो है वे दान तथा धर्मके प्रभावसों पूर्ण सब सौख्य पावै हैं ॥ ८ ॥ और जे लोग वर्ण तथा आश्रममें स्थित होकै अपने धर्मको पालन करै और जे वैश्वदेवके

पछि आयेभये अभ्यागतनको पूजन करैं हैं ॥ ९ ॥ दया तथा दाक्षिण्य करिकै युक्त अपने धर्ममें स्थित जे संध्योपासन आदिकर्मनको और वेदाध्ययनको अपने धर्ममें स्थित होके करैं हैं ॥ १० ॥ और जे उत्तम नर गौ तथा ब्राह्मणको कष्टते उबारैं हैं और जे वेद तथा शास्त्रनको सुनैं हैं तथा ब्राह्मणको

सन्ध्योपास्त्यादिकर्माणिवेदाध्ययनमेवच ॥ कुर्वन्तियेस्वधर्मस्थादयादाक्षिण्यसंयुताः ॥ १० ॥ गांचविप्रंस्त्रियंकष्टादुद्धरन्तिनरोत्तमाः ॥ शृण्वन्तिवेदशास्त्रंयेकुर्वते विप्रसेवनम् ॥ ११ ॥ तीर्थाटनंचकुर्वन्तिसदासंयमसंयुताः ॥ पञ्चाग्निसाधकायेतु क्रोधलोभविवर्जिताः ॥ १२ ॥

सेवन करैं हैं ॥ ११ ॥ और जे सदा नियमयुक्त होके तीर्थाटन करैं हैं और जे पंचाग्निको साधन करै है और क्रोध लोभ करिकै रहित हैं ॥ १२ ॥

और जाने कन्यादान कियो है और जाने धर्मसों वृक्ष लगाये हैं और यती तथा
योगके करनहारे और निराहार व्रतमें तत्पर ॥ १२ ॥ और अकालमें अन्नके देनहारे और
सस्ते समयमें सोनेके देनहारे और जाडेमें वस्त्रनके देनहारे तथा आगिसों तपावनहारे ॥

कन्यादानंकृतंयेनरोपिताधर्मतोद्रुमाः ॥ यतिनोयोगयुक्ताश्चनिराहारायतव्रताः ॥
॥ १३ ॥ दुर्भिक्षेऽन्नप्रदातारः सुभिक्षेचहिरण्यदाः ॥ हेमन्तेवस्त्रदातारोवह्निदाश्चतथै
व च ॥ १४ ॥ परोपकारनिरताधर्माधर्मविचारकाः ॥ शास्त्रेषुनिरतानित्यंनित्यं
परहितेरताः ॥ एतेसर्वेमयादृष्टाधर्मलोकेनसंशयः ॥ १५ ॥ इति श्रीनासिकेतो
पाख्यानेपुण्यधर्मनिरूपणंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

॥ १४ ॥ और पराये उपकारके करनहारे और धर्म अधर्मके विचार करनहारे और सदा
शास्त्रनको विचार करनहारे और जे नित्य पराये हितमें लगे रहते हैं ये सब मैंने धर्मराजके

देखे यामें संदेह नहा है ॥ १९ ॥ इति श्रीपाण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ नासिकेत बोले ॥ फिरि मैंने वह स्थान देखो जहाँ धर्मात्मा रहैं हैं और जहाँ पुष्पोदका नाम नदी है जामें निर्मल जल वहै है ॥ १ ॥ और

नासिकेतउवाच ॥ पुनःस्थानंमयादृष्टंधर्मात्मायत्रतिष्ठति ॥ नदीपुष्पोदका नामजलंवहतिशीतलम् ॥ १ ॥ सुवर्णवालुकास्तस्यांतीरेनानाविधाद्रुमाः ॥ पुष्पाणिचसुगंधीनिधारयंतिचतेद्रुमाः ॥ २ ॥ नद्यास्तीरेह्यहंविप्राहृष्टवान्मन्दिराणिच ॥ तेषुक्रीडान्तिमनुजाः सदाधर्मस्यपालकाः ॥ ३ ॥ शीतमन्दसुगन्धैश्चपवनैःसेवितानराः ॥ दिव्यरूपधरानार्यःक्रीडान्तिनरपुंगवैः ॥ ४ ॥

वामें सोनेकी बालू है और किनारेमें नाना प्रकारके बहुतसे वृक्ष हैं और वे वृक्ष नाना प्रकारके सुगंधित फूलनको धारण करे है ॥ २ ॥ ॥ और हे विप्रो ! वा नदीके किनारे बहुतसे मंदिर देखे उन मंदिरनमें धर्मके पालनहारे मनुष्य क्रीडा करैं हैं ॥ ३ ॥ शीतल मंद सुगंध पवन

करिके सेवन किये गये मनुष्य और दिव्य रूपनको धारण करनहारी नारी श्रेष्ठ नरनके साथ विहार करें हैं ॥ ४ ॥ और सिद्धनके तथा गंधर्वनके वृंदन करिके तथा किन्नरन करिके सेवित हैं और नाना प्रकारके वस्त्रनको पहिरे हुए नाना प्रकारके रत्ननसों शोभित हैं ॥ ५ ॥ रूपकी

सिद्धगन्धर्ववृन्दैश्चकिन्नरैश्चोपसेविताः ॥ नानावस्त्रपरीधानानानारत्नोपशोभिताः ॥ ५ ॥ रूपलावण्यसंयुक्ताद्दष्टमात्रामनोहराः ॥ संपूर्णचन्द्रवदनाःकर्णान्तायतलोचनाः ॥६॥ एवंविधाःस्त्रियोरम्यामोदंतेपतिभिःसह ॥ पुष्पोदकायास्तीरेतेनरानार्यश्चशोभनाः ॥ ७ ॥

लावण्य जो सुंदरताई है ता करिकै संयुक्त हैं और देखनेहीसो मनकी हरनहारी हैं और पूरे चंद्रमाके समान जिनके मुख और कानों ताईं हैं बडे नेत्र जिनके ॥ ६ ॥ या प्रकारकी सुंदर स्त्री पतिनके साथ आनंद करि रही हैं वा पुष्पोदका नाम नदीके किनारे नर नारी स

हैं ॥ ७ ॥ और वहाँ बसते भये नर नारी पूर्व कर्मनसों नाना प्रकारके भोगनको भोगें हैं और धर्मराजके पुरमें बसनहारे नर तीनों लोकनमें विख्यात हैं ॥ ८ ॥ वहाँ न तौ क्षुधा लगै है और न पिपासा लगै है और न सरदी गरमीको भय है और न बुढापा है न मृत्यु है न दुःख है और

वसन्तेविविधान्भोगान्भुञ्जन्तेपूर्वकर्मणा ॥ नरास्त्रैलोक्यविख्याताधर्मराजपुरेस्थि
ताः ॥ ८ ॥ नक्षुधानापिपासाचनापिशीतोष्णजंभयम् ॥ नजरानैवमृत्युश्चनदुःखं
पलितानिच ॥ ९ ॥ एवंपूर्वकृतेनैवलभ्यतेसुखमुत्तमम् ॥ पापात्मानोदुराचारानि
त्यंकलहकारिणः ॥ १० ॥ निन्दकाःसर्वजीवानांतेवैसर्वत्रदुःखिताः ॥ विष्णुभक्तिर
ताश्चेतुविष्णुध्यानपरायणाः ॥ ११ ॥

न पलित है ॥ ९ ॥ ऐसे पूर्वजन्ममें किये भये सुकृतनसों उत्तम सुख प्राप्त होय है और पापात्मा दुराचारी और नित्य कलह करनहारे ॥ १० ॥ और सब जीवनके निंदक ये सर्वत्र दुःखी

रहे हैं और जे विष्णुकी भक्तिमें रत हैं और विष्णुहीके ध्यानमें परायण हैं ॥ ११॥ वे मनुष्य यमलोककी वार्त्ताको भी नहीं सुनेहैं और वे संसाररूपी समुद्रसे मुक्त होय हैं यामें संदेह नहीं है ॥ १२ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतो

शृण्वतेयमलोकस्यवार्तामपिनतेनराः ॥ संसारार्णवमुक्तास्तेभवन्त्येवनसंशयः ॥ ॥१२॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेपुष्पोदकानदीवर्णनंनामचतुर्दशोऽध्यायः॥ १४॥ नासिकेतउवाच ॥ अथाहंसंप्रवक्ष्यामियममार्गस्यविस्तरम् ॥ अष्टाशीतिसहस्राणियोजनानांप्रमाणतः ॥१॥ यमलोकस्यचाध्वानमाहुर्मानुषलोकतः ॥ २॥ याम्यपाशैर्वृतःप्रेतोहाहेतिप्ररुदन्पथि ॥ स्वगृहंतुपरित्यज्यपुरंयाम्यमनुव्रजेत् ॥ ३ ॥

पाख्यानभाषाटीकायां पुष्पोदकानदीवर्णनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ नासिकेत बोले ॥ या पीछे मैं यमके मार्गको विस्तार तुमसों कहोंगो वह प्रमाणमें अट्ठासी हजार योजनको है ॥ १ ॥ यह मनुष्यलोकके मार्गसों प्रमाण कहैं ॥ हैं २ ॥ या मार्गमें यमके

पाशन करि बँधो भयो प्रेत हाय हाय ऐसे रोवतो भयो अपने घरको छोडिके यमके लोकको जायहै ॥ ३ ॥ और असिपत्रवन करिके युक्त वा मार्गमें बहुतसे दुःख हैं क्षुधा तथा पिपासासों प्रेत सदा पीडित रहै हैं ॥ ४ ॥ तपी भई बालू करिकै युक्त महाघोर वा मार्गमें

मार्गेबहूनिदुःखानिअसिपत्रवनान्विते ॥ क्षुत्पिपासार्दितःप्रेतः प्राप्नोतिसततंद्वि
जाः ॥ ४ ॥ तस्मिन्मार्गेमहाघोरेतप्तवालुकसंयुते॥ क्वचिदङ्गारपर्यंकाअन्धकारा
न्वितेद्विजाः॥५॥ क्रूरास्तेकिंकराःसर्वे पापिष्ठांस्ताडयंतिहि ॥ मूर्च्छितान्क्षणमात्रे
णपतितान्पुनरुत्थितान् ॥ ६ ॥ विनाधर्मेणपापास्तेपात्यन्तेनरकेध्रुवम् ॥ महापा
पोपपापानिजातिभ्रंशकराणिच ॥ ७ ॥

और हे द्विजो ! कहीं अंधकारकरि युक्त वामें अंगारनकी सज्या हैं ॥ ५ ॥ और क्रूर सब यमके दूत पापीनको ताडना करे हैं तब वे पापी मूर्च्छित होजाय हैं और क्षणमात्रहीमें गिरिके फिरि उठि आवैं हैं ॥ ६ ॥ और धर्मके विना वे पापी निश्चय नरकमें डारे जाय हैं और महापाप उपपाप तथा

जातिसों गिरावनहारे पाप ॥ ७ ॥ और जे वर्णसंकर करनहारे तथा मलिन करनहारे और अपात्र
करनहारे ऐसे पापनको जे अधम नर करैं हैं ॥ ८ ॥ हे द्विजो ! मनुकरि कहे भये उन पापनको
मैं कहौंगो ब्रह्महत्या मदिराको पीवनो चोरी गुरुकी स्त्रीसों गमन करनो ॥ ९ ॥ इन सबनको

संकरीकरणानिस्युर्मलिनीकरणानिच ॥ अपात्रीकरणंपापंयेकुर्वन्तिनराधमाः ॥
॥ ८ ॥ तान्यहंसंप्रवक्ष्यामिमनुनोक्तानिवैद्विजाः ॥ ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वङ्ग
नागमः ॥ ९ ॥ महान्तिपातकान्याहुःसंसर्गोपिचतैःसह ॥ गोवधोऽपेयपानंचपार
दार्यात्मविक्रयौ ॥ गुरुमातृपितृत्यागःस्वाध्यायस्यसुतस्यच ॥ १० ॥ परिवित्तिता
नुजेजन्तोःपरिवेदनमेवच ॥ तयोर्दानंचकन्यायास्तयोरेवचयाजनम् ॥ ११ ॥

महापाप कहैं हैं और इन पापिनको संसर्ग करनोहू महापातक है और गौको वध अपेयको पीनो
पराईस्त्रीसों गमन करनो अपनो विक्रय तथा गुरु माता पिता स्वाध्याय और पुत्रको त्याग ॥ १० ॥
और परिवित्तिपन और जीवको परिवेदन और उनको कन्यादान करनो तथा उन्हींको यजन करा-

वनो ॥ ११ ॥ कन्याको दूषित करनो व्याजको खानो व्रतको छोडनो और तलाव बाग स्त्री
तथा संतानको बेचनो ॥ १२ ॥ और व्रात्य अर्थात् संस्कारसें हीन होनो और बांधवनको
त्याग और नौकरी लेके पढावनो और सब आकरनमें अधिकार करनो तथा बडे यंत्रको चला-

कन्याया दूषणंचैव वार्धुषित्वं व्रतच्युतिः ॥ तडागारामदाराणामपत्यस्य च विक्रयः ॥
॥ १२ ॥ व्रात्यता बान्धवत्यागो भृतकाध्यापनं तथा ॥ सर्वाकरेष्वधीकारो महाय
न्त्रप्रवर्त्तनम् ॥ १३ ॥ हिंसौषधस्त्र्याजीवश्चाभिचारो मूलकर्म च ॥ इन्धनार्थमशु
ष्काणां द्रुमाणामवपातनम् ॥ १४ ॥ आत्मार्थं च क्रियारम्भो निंदितान्नादनं तथा ॥
अनाहिताग्निता स्तैन्यमृणानामनपक्रिया ॥ १५ ॥

वनो ॥ १३ ॥ और हिंसा औषध तथा स्त्रीसें जीविका करनी और मारण कर्म तथा मूलकर्म
करनो और ईंधनके लिये हरे वृक्षनको काटनो ॥ १४ ॥ और अपने लिये कामको आरंभ करनो

तथा निंदित अन्नको खानो और अग्निहोत्र न करनो चोरी करनो और काहूको पोषण न करनो अपकार करनो ॥ १५ ॥ और धान्य अथवा पशुको चुरावनो और पुत्रकी स्त्रीको सेवन करनो और स्त्री शूद्र वैश्य इनको वध करनो और नास्तिक होनो ये उपपातक हैं ॥ १६ ॥ ब्राह्म-

धान्यस्याथपशोः स्तैन्यमपत्यस्त्रीनिषेवणम् ॥ स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधोनास्तिक्यंचोपपातकम् ॥ १६ ॥ ब्राह्मणस्यरुजःकृत्यं घ्रातिरघ्रेयमद्ययोः ॥ मैथुनंपुंसिजैह्म्यंचजातिभ्रंशकरंस्मृतम् ॥ १७ ॥ खराश्वोष्ट्रमृगेभानामजाविकवधस्तथा ॥ संकरीकरणंज्ञेयंमीनाहिमाहिषस्यच ॥ १८ ॥

णको दुःख देनो और न सूँघनेयोग्य वस्तुको तथा मद्यको सूँघनो और कुटिलता करनी तथा पुरुषमें मैथुन करनो ये सब जातिसों भ्रंश करनहारो अर्थात् जातिसे गिरावनहारे हैं ॥ १७ ॥ गदहा घोडा ऊँट हरिण और सृण जो एक प्रकारका मृग है ताको वध तथा भेडी बकरीको वध

और मछली साँप तथा भैंसेको वध इन सबनको संकरीकरण जानिये ॥ १८ ॥ निंदित मनुष्य-
नसों धन लेनो वाणिज्य करनो और शूद्रकी सेवा करनी और झूँठ बोलनो ये अपात्रीकरण है
॥ १९ ॥ चिउंटी कीडे मकोडोंकी हत्या भोजनके साथ मद्यका सेवन, फल, समिधा तथा फूलोंकी

निंदितेभ्योधनादानंवाणिज्यंशूद्रसेवनम् ॥ अपात्रीकरणंज्ञेयमसत्यस्यचभाष
णम् ॥ १९ ॥ कृमिकीटकयोर्हत्यामद्यानुगतभोजनम् ॥ फलैधःकुसुमस्तेय
मधैर्यंचमलावहम् ॥ २० ॥ एभिस्तुषड्विधैःपापैःपच्यंतेतेनराधमाः ॥ पापकर्म
रतायेचसर्वधर्मविवर्जिताः ॥ २१ ॥ अदत्तदानाः कृपणागर्विंतालोभसंयुताः ॥
विषयासक्तमनसोबुद्धिमोहान्वितानराः ॥ २२ ॥ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्या
नेपापनिरूपणंनामपञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

चोरी और कायरता पापकारक हैं जे पापकर्मनमें रत हैं तथा जे सब धर्मनसों रहित हैं वे अधम
नर इन छः प्रकारके पापनसों नरकमें पचाये जायँ हैं ॥ २० ॥ २१ ॥ जिन्होंने कबहुँ दान नहीं

दियो है वे और कृपण गर्वित तथा लोभी और जिनके मन विषयनमें लगि रहे हैं और बुद्धिको मोह जो अज्ञान है ता करिकै युक्त है वे सब नरकनमें पचाये जाय हैं ॥ २२ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

नासिकेत उवाच ॥ ज्ञाताज्ञातेषुपापेषुक्षुद्रेषुचमहत्सुच ॥ षट्सुषट्सुचमासेषुप्रायश्चित्तंतुयश्चरेत् ॥ १ ॥ निष्कल्मषोनरोविप्राःसकृतान्तंनपश्यति ॥ प्रायश्चित्तमकृत्वेहनरोभवतिनारकी ॥ २ ॥ प्रायश्चित्तंचरेद्यस्तुवाङ्मनःकायकर्मसु ॥ सप्राप्नोतिशुभाँल्लोकान्देवगन्धर्वसेवितान् ॥ ३ ॥

नासिकेत बोले ॥ कि छोटे वडे जाने न जाने पापनमें छः छः महीना पीछे जो प्रायश्चित्तको करै है ॥ १ ॥ हे ब्राह्मणो ! पापनसों रहित वे मनुष्य कृतांत जे यम हैं तिनको मुख नही देखैं हैं और जो प्रायश्चित्तको नही करैं है वह नारकी होय है ॥ २ ॥ और जो मनुष्य वाणी मन तथा

कायके कर्मनसों प्रायश्चित्तको करै है वह गंधर्वनकरिकै सेवन करे गये शुभ लोकनको प्राप्त होय है ॥ ३ ॥ सदा वेदाभ्यासको करनहारो और नित्य तीर्थनको सेवन करनहारो तथा नित्य जितेंद्रिय नर सत्यही यमको नही देखै है ॥ ४ ॥ और प्रातःस्नान करनहारा पुरुष यमकी

वेदाभ्यासरतोनित्यंनित्यंतीर्थोपसेवकः ॥ नित्यंजितेन्द्रियःसत्यंयमंरौद्रंनपश्य
ति ॥ ४ ॥ याम्यंहियातनादुःखंप्रातः स्नायीनपश्यति ॥ प्रातःस्नानेनपूज्यन्तेह्य
पिपापकृतोनराः ॥ ५ ॥ पृथिवींकाञ्चनंगांचमहादानानिषोडश ॥ दत्त्वातुन
निवर्तन्तेस्वर्गलोकाद्द्विजोत्तमाः ॥ ६ ॥ पुण्यासुतिथिषुप्राज्ञोव्यतीपातेचसंक्रमे ॥
स्नात्वादत्त्वाचयत्किंचिन्नैवगच्छतिदुर्गतिम् ॥ ७ ॥

यातनानके दुःखनको नही देखै हैं प्रातःकालके स्नानसों पापीहू पुजे जाय हैं ॥ ५ ॥ हे द्विजोत्तमो ! पृथिवी सुवर्ण गौ तथा षोडश महादाननको देकरिकै प्राणी स्वर्गलोकते नही लोटैं हैं ॥ ६ ॥ पवित्र अमावस्या आदि तिथिनमें व्यतीपातमें संक्रान्तिमें स्नान करिकै और थोरासो दान करिकै दुर्गतिको

नहीं प्राप्त होय हैं ॥ ७ ॥ दाता दारुण जो रौरवको मार्ग है तामें नहीं जाय हैं और मर्त्यलोकमें धनसों वर्जित जो कुल है तामें नहीं उत्पन्न होय हैं ॥ ८ ॥ सत्य बोलनहारो तथा सदा मौन रहनहारो और मधुर वचन कहनहारो और क्रोधको न करनहारो सदा क्षमा करनहारो और बहुत न बोलनहारो तथा

नैवाक्रमन्तिदातारोदारुणंरौरवंपथम् ॥ मर्त्यलोकेनजायन्तेकुलेधनविवर्जिते ॥ ८ ॥ सत्यवादीसदामौनीप्रियवादीचयोनरः अक्रोधनःक्षमाचारोनातिवागनसूयकः ॥ ९ ॥ सदादाक्षिण्यसंपन्नःसर्वभूतहितेरतः ॥ गोप्ताचपरधर्माणांवक्तापरगुणस्यच ॥ १० ॥ परस्वंतृणमात्रंचमनसापिनयोहरेत् ॥ नपश्यन्तिद्विजश्रेष्ठाएतेनरकयातनाम् ॥ ११ ॥

असूयारहित मनुष्य ॥ ९ ॥ और सदा चतुराईकरि युक्त और सब प्राणीनके हितमें रत और पराये धर्मका रक्षण करनहारो तथा पराये गुणनको प्रगट करनहारो ॥ १० ॥ और तृणमात्रहु पराये धनकी

जो मनसोंहू जे चिंता नहीं करें हैं हे द्विजश्रेष्ठो! वे नरककी यातनाको नहीं देखें हैं ॥ ११ ॥ जो मन-
सोंहूँ पराई स्त्रीको सेवन नहीं करें है वा कारिकै दोनों लोक समेत पृथ्वी धारण की गई ॥ १२ ॥
ताते धर्ममें रत पुरुषन करिकै पराई दाराके सेवनको त्याग करनो योग्य है और जे पराई दारान-

मनसाचपरेषांयःकलत्राणिनसेवते ॥ सहलोकद्वयेनैवतेनावश्यंधराधृता ॥ १२॥
तस्माद्धर्मरतैस्त्याज्यंपरदारोपसेवनम् ॥ यान्तियेपरदारांस्तेनरानिरयगामिनः ॥
॥ १३ ॥ मातरंपितरंयस्तुह्याराधयातिदेववत् ॥ संप्राप्तेवार्द्धकेकालेनसयातियमा
लयम् ॥ १४ ॥ अतश्चैवास्त्रियोधन्याःशीलस्यपारिरक्षणात् ॥ शीलभङ्गेननारीणां
यमलोकःसुदारुणः ॥ १५ ॥

सों गमन करें हैं वे नरकगामी होय हैं ॥ १३ ॥ जो देवताके समान माता पिताकी सेवा करें
हैं वह वृद्धावस्थाके आवनेपै यमलोकको नहीं जाय है ॥ १४ ॥ याहीते शीलकी रक्षा करनेसों

स्त्री धन्य हैं और शीलके अंग होनेसे नारीनको अति दारुण यमको लोक मिलै है ॥ १८ ॥ गोके देनेसों मनुष्य वा मार्गमें सुखसों जाय है और हाथी घोडे तथा रथ देनेसे यमको मार्ग मनुष्यन-को सुख देनेहारो होय है ॥ १९ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदि-

तस्मिन्मार्गेसुखंयान्तिगोप्रदानेनमानवाः ॥ गजाश्वरथदानेनयममार्गःसुखाव-
हः ॥१९॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेपुण्यकर्मवर्णनंनामषोडशोऽध्यायः ॥१६॥
नासिकेतउवाच ॥ पुनरेवप्रवक्ष्यामियममार्गंभयंकरम् ॥ तस्मिन्मार्गेमहाघोरेवि-
षमाः पर्वताः क्वचित् ॥१॥ कीलकाश्चक्वचिद्घोराअसिपत्रवनंक्वचित् ॥ क्वचिद्वर्ष-
न्तिपाषाणाःक्वचित्संतप्तवालुकाः ॥ २ ॥

कृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ नासिकेत बोले ॥ फिरिहूँ भयं-कर यमके मार्गको कहोंगो वा महाघोर मार्गमें कहूँ २ अति विषम पर्वत हैं ॥ १ ॥ और वा-

मार्गमें कहूँ तो बडी घोर लोहेकी कीलें हैं और कहूँ असिपत्रनको वन है और कहूँ पत्थर बर्षे हैं और कहूँ संतप्त वालुका है ॥ २ ॥ और कहूँ हिमालयते सौगुनो अधिक वडो दारुण शीत है और कहूँ वडो भयंकर अंधकार है और कहूँ वडो दारुण घाम है ॥ २ ॥ कहूँ

हिमालयाच्छतगुणंक्वचिच्छीतंसुदारुणम् ॥ अन्धकारंमहारौद्रंक्वचिद्घर्मःसुदारुणः ॥ ३ ॥ क्षुरधारामयोमार्गः क्वचिद्वैपूयशोणितम् ॥ तत्रवैतरणीनामनदीक्षुद्राभयंकरा ॥ ४ ॥ शतयोजनविस्तीर्णाकाकगृध्रैः समन्विता ॥ तस्यांमज्जन्तिपापिष्ठादुःखशोकसमन्विताः ॥ ५ ॥

मार्ग छुराकीसी धार है और कहूँ पीव और लोहू है वहां वडी भयानक क्षुद्र वैतरणी नाम नदी है ॥ ४ ॥ वह सौ योजन अर्थात् चारसौ कोशकी चौडी है और कौआ तथा गीधनकरिकै

युक्त है वह नदीमें दुःख तथा शोकसों युक्त पापी डूबै हैं ॥ ५ ॥ और हे द्विजोत्तमो ! गोके
दानके करनहारे मनुष्य वाके पार उतरि जाय हैं और जे मनुष्य तीर्थनके स्नानमें रत रहे हैं उनको
वह नदी सुखसों उतरने योग्य है ॥ ६ ॥ वाही मार्गमें जे धर्मिष्ठ हैं वे सुखयुक्त रहे हैं हे द्विजोत्तमो !

**गोप्रदानस्यकर्त्तारस्तेतरान्तिद्विजोत्तमाः ॥ तीर्थस्नानरतैर्मर्त्यैः सासरित्सुतराभ
वेत् ॥ ६ ॥ तस्मिन्नेवतुमार्गेयेधर्मिष्ठाःसुखसंयुताः एकएवास्तिसर्वत्रव्यवहारोद्वि
जोत्तमाः ॥ ७ ॥ एकस्मिन्समयेविप्राधर्मराजसभांप्रति ॥ सूर्यतेजःप्रतीकाशोह्या
गतोनारदोमुनिः ॥ ८ ॥ यमस्तुनारदंदृष्ट्वाप्रत्युत्थायकृताञ्जलिः ॥ अर्घ्यपाद्यादि
भिश्चैवनारदंप्रत्यपूजयत् ॥ ९ ॥**

सर्वत्र एकही व्यवहार है ॥ ७ ॥ हे विप्रो ! एक समय धर्मराजकी सभाको सूर्यके समान है तेज
जिनको ऐसे नारदमुनि आवत भये ॥ ८ ॥ तब यम नारदमुनिको देखतेही हाथ जोरि उठिके ठाढे होत

भये और अर्घ्य पाद्यादि करिकै नारदमुनिको पूजत भये ॥ ९ ॥ और देवतानकोसो है दर्शन जिनको ऐसे नारदमुनि आपनपै बैठभये ऐसे शोभायमान भये जैसे आकाशमें चंद्रमा शोभित होय है ॥ १० ॥ ता पीछे वैवस्वत राजा नारदमुनिसों बोलत भये कि, हे द्विजश्रेष्ठ ! आपको आवनो

आसनेचोपविष्टस्तुनारदोदेवदर्शनः ॥ शोभतेस्ममहातेजास्तारापतिरिवाम्बरे ॥
॥१०॥ ततोवैवस्वतोराजानारदंप्रत्युवाचह ॥ स्वागतंभोद्विजश्रेष्ठब्रह्मपुत्रमहामुने
॥११॥ अद्यमेसफलंजन्मममाद्यसफलंदिनम् ॥ अद्यमेसफलंसर्वंभवदालोकनान्मु
ने ॥ १२ ॥ किमर्थमिहचायातोब्रूह्यागमनकारणम्॥ नारदउवाच॥ भवतांदर्शना
र्थायब्रह्मलोकादिहागतः ॥ धर्माधर्मस्यसर्वस्यनिर्णयंद्रष्टुमागतः॥१३॥ इति श्रीना-
सिकेतोपाख्यानेवैतरणीवर्णनंनारदागमनकथनंनामसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अच्छा भयो है ब्रह्माके पुत्र ! आपको नमस्कार है ॥ ११ ॥ आज मेरो जन्म सफल भयो आज मेरो दिन सफल है । हे मुनि ! आपके देखनेसे आज मेरो सब सफल भयो ॥ १२ ॥ आप यहां काहेके

लिये आये हैं आवनको कारण कहिये ॥ नारद बोले ॥ कि, मैं आपके दर्शनके लिये ब्रह्मलोकते यहां आयो हौं और धर्म तथा अधर्मके देखनेको आयो हौं ॥ १३ ॥ इतिश्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

नासिकेतउवाच ॥ ॥ तयोरेवंसंवदतोर्नारदस्ययमस्यच ॥ तत्रस्थानेचदिव्यानां विमानानांशतानिच ॥ १ ॥ भेरीमृदंगादिघोषैर्गीतवादित्रनिस्स्वनैः ॥ घण्टामर्दलवीणानांरवेणपणवस्यच ॥ २ ॥ आगतानिसहस्राणितेजःपुञ्जयुतानिच ॥ तेनवैमहसाविप्रायमोन्तर्द्धानमागमत् ॥ ३ ॥

नासिकेत बोले ॥ नारद और यम ये दोनों ऐसे बातें कहरहे कि, वाही समय वहां सैकरान दिव्य विमान आये ॥ १ ॥ जिनमें भेरी मृदंग आदि शब्द हैं तिन करिके और घंटा ढोल तथा वीणानके शब्दनसों तथा पणवके शब्दसों शब्दायमान हैं ॥ २ ॥ ऐसे तेजके पुंजनसों

युक्त हजारनही विमान आवत भये हे ब्राह्मणो ! वाही तेजसों यम अंतर्धानको प्राप्त होत भये ॥ ३ ॥ और ब्रह्मपुत्र जे नारद मुनि हैं वेहू आश्चर्यमें होगये और कुछ नहीं कहत भये और क्षण-मेंही भयसे पीडित तथा भ्रष्ट है मन जाको ऐसो धर्मराज आवत भयो ॥ ४ ॥ नारद बोले

ब्रह्मपुत्रोविलक्षोभूदवदन्नैवकिंचन ॥ क्षणेनैवागतोधर्मोभयार्तो भ्रष्टमानसः ॥ ४ ॥

नारद उवाच ॥ सत्यंब्रूहिमहाराजाविष्णुतुल्यपराक्रम ॥ असुराराक्षसाघोराः सर्वेतेवशसंस्थिताः ॥ कस्मात्त्वंभयसंत्रस्तोवायुवेगेनानिर्गतः ॥ ५ ॥ धर्मराज उवाच ॥ ॥ अतिगुह्यांमुनिश्रेष्ठकथांपापप्रणाशिनीम् ॥ ६ ॥

कि, हे विष्णुतुल्य पराक्रम महाराज तुम सत्य कहो कि, असुर और घोर राक्षस ये सब आपके वशमें हैं सो तुम काहेसों भयभीत होके पवनकेसे वेगसों निकल गये ॥ ५ ॥ ॥ धर्मराज बोले ॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! बहुतही गुप्त पापनकी नाश करनहारी जो कथा है ताहि तुमसों

कहौंहौं हे विद्वन् ! संपूर्ण धर्मकी बढावनहारी है ॥ ६ ॥ मृत्युलोकमें बडो पंडित और सत्यव्रतमें परायण तथा प्रजानको पालन करनहारो जनकनाम विख्यात राजा होत भयो वह जितेन्द्रिय हो और दानके देनेमें तत्पर हो और क्रोध तथा मात्सर्यसों रहित हो ॥ ७ ॥

ब्रवीमिसकलांविद्वन्पुनर्धर्मांविवर्धनीम् ॥ मृत्युलोकेमहाप्राज्ञःसत्यव्रतपरायणः॥७॥ जनकोनामविख्यातःप्रजानांपरिपालकः ॥ जितेंद्रियोदानपरः क्रोधमात्सर्यवर्जितः ॥ ८ ॥ तस्यपत्नीसुरूपासीन्नाम्नासत्यव्रताशुभा ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णासर्वधर्मपरायणा ॥ ९ ॥

सत्यव्रता यह जाको सुंदर नाम है और सुंदर रूपवाली सब लक्षणसों संपन्न तथा सब धर्मनमें परायण ऐसी वाकी रानी रही ॥ ८ ॥ जो विष्णुकी बुद्धिसों सदा पतिकी सेवा करती और पतिही है प्राण

जाके ऐसी वह सदा भर्त्ताके वाक्यमें रत रहती और पतिके सुखी होनेपै नित्य सुखी रहती और
वाके दुःखमें दुःखी रहती ॥९॥ चतुर ही और सदा प्यारी बात कहती और क्रोध कबहूँ नहीं करती और

भर्तारंविष्णुबुद्ध्यायानित्यंशुश्रूषतेशुभा ॥ पतिव्रतापतिप्राणाभर्तृवाक्येयसदार
ता ॥ १० ॥ सुखितेसुखितानित्यंदुःखितेदुःखिताचया ॥ दक्षाचाप्रियवाङ्नित्य
मक्रोधाऽनृतवर्जिता ॥ ११ ॥

कबहू झूँठ नही बोले है और सब सुंदर गुणनकारि शोभित वह नित्य अतिथिनको पूजन करती ॥
॥ १० ॥ जनकराजाकी प्यारी भार्या जो धर्मके कार्यमें सदा रत रहै है वह श्रेष्ठ विमानमें

बैठिकर ब्रह्मलोकको जाय है ॥ ११ ॥ इन्द्र आदि सब देवतानके गण वाके सन्मुख आये है और हे विभो ! पितामहनेहू वाको प्रणाम कियो है ॥ १२ ॥ और जनक इन्द्रालयमें प्रविष्ट

अतिथिः पूज्यतेनित्यंसर्वसद्गुणशालिनी ॥ जनकस्यप्रियाभार्याधर्मकार्येसदारता ॥ १२ ॥ सायातिब्रह्मणोलोकं विमानवरमास्थिता ॥ शक्रादयोदेवगणास्वस्याः संमुखमागताः ॥ १३ ॥ पितामहश्चतस्यावैप्रणतिंकृतवान्विभो ॥ इंद्रालयस्य मध्येतुप्रविष्टोजनकस्तथा ॥ १४ ॥

भयो वह देवी वा पतिको लेके संपूर्ण देवतानके गण समेत ॥ १३ ॥ ब्रह्माके लोकमें गई. हे मुनीश्वर ! मैं वाके तेजसों भयभीत होके छिपि गयो यह कारण मैंने आपसों निवेदन कियो ॥ १४ ॥

नासिकेत बोले ॥ हे मुनीश्वरो । इत्यादि जो मैंने वहां देखोहो सो सब आप लोगनके आगे निवेदन कियो यामें संदेह न करनो चाहिये मैंने सब प्रत्यक्ष देखो है ॥ १५ ॥ वैशंपायन बोले ॥ हे जनमेजय

तंगृहीत्वापतिंदेवी सर्वदेवगणैर्वृता ॥ गतासाब्रह्मणोलोकंतस्यावैतेजसामुने ॥
॥ १५ ॥ लीनोहंभयभीतस्तुकारणंतेनिवेदितम् ॥ नासिकेतउवाच ॥ ॥ इत्या
दिसर्वमाख्यातंतत्रदृष्टंमुनीश्वराः ॥ १६ ॥ संदेहोनात्रकर्तव्यः सर्वप्रत्यक्षदर्श
नात् ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ जनमेजयमहाराजपूर्वकल्पाश्रितांकथाम् ॥ १७ ॥

महाराज । पूर्वकल्प भई या कथाको श्रद्धायुक्त होकै सुनैं है वह सब पापनते छूटि जाय है ॥१६॥ नासिकेत

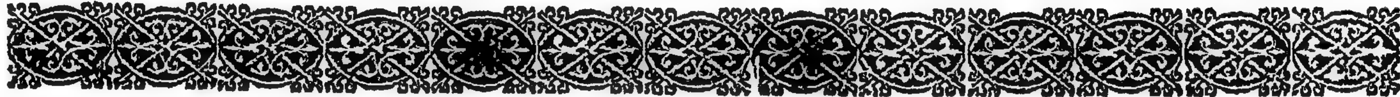
कारि कहो भयो यह आख्यान परम पवित्र है ॥ १७ ॥ धन्य है स्वस्ति जो कल्याण है ताको अयन कहिये स्थान है व्याधि रोग है ताको और दारिद्र्यको नाश करनहारो है याको सुनतो भयो मनुष्य

शृणोतिश्रद्धयायुक्तः सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ नासिकेतनकथितमाख्यानंपावनंमहत् ॥ १८ ॥ धन्यंस्वस्त्ययनंचैवव्याधिदारिद्र्यनाशनम् ॥ शृण्वन्नरोविमुक्तःस्याज्जन्मसंसारबन्धनात् ॥ १९ ॥ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेधर्माधर्मनिरूपणंनामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥ श्रीरस्तु ॥

जन्मरूपी संसारको बंधन ताते छूटि जाय है ॥ १८ ॥ १९ ॥ इति श्रीमत्पंडित परमसुखतनयपंडित-

केशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायांधर्माऽधर्मनिर्णयो नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

वस्वब्ध्यङ्कनिशाकरैश्चगणितेवर्षे शुभेवैक्रमे माघेमास्यसितेदलेगुरुतिथौ श्रीसौम्यवारेशुभे ॥
टीकेयंसरलामनुष्यवचसाश्रीकेशवाख्यैर्द्विजैर्निर्मायिप्रहिताव्यवैश्यमणये श्रीक्षेमराजाय या ॥ १ ॥



इदं पुस्तकं कल्याणनगर्यां श्रीकृष्णदासात्मज--गंगाविष्णोः अध्यक्ष
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" मुद्रणालये पंडित-शिवदुलारे वाजपेयीत्यनेन
स्वाम्यर्थं मुद्रयित्वा प्रकाशितम् । संवत् १९८०, शके १८४५ ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
खेतवाडी-मुंबई.

श्रीवेङ्कटेश्वरीय--क्रय्यपुस्तकोंकी संक्षिप्त--सूची।

नाम.	की. रु. आ.
पद्मपुराण सम्पूर्ण ५५००० ग्रन्थ बहुत पुस्तकोंके द्वारा शुद्ध होकर छपा तैयार है	२०—०
हरिवंशपुराण सटीक ...	१०—०
साम्बपुराण–इसमें सूर्योपासनाकी सांगोपांग विधि कही गयी है ...	२—०
श्रीवाल्मीकीयरामायण संस्कृत मूल और अत्युत्तम भाषाटीकामाहात्म्य और अनुक्रमणिका सहित मोटा कागज सुंदर अक्षर ...	३०—०
श्रीवाल्मीकीयरामायण केवलभाषा दो जिल्दोंमें	१५—०
श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण तनिश्लोकी रामानुजी भूषण संस्कृत टीकासहित	३०—०
श्रीवाल्मीकीयरामायण रामाभिरामीटीका	१५—०
तथा देशी कागज ...	१५—०

अत्रेयमभ्यर्थना ।

अस्माकं मुद्रणालये वेद-वेदान्त-धर्मशास्त्र-प्रयोगयोग-सांख्य--ज्योतिष-पुराणेतिहास-वैद्यक-मंत्रस्तोत्र-कोश-काव्य-चम्पू-नाटका-ऽलंकार-संगीत-नीति-कथाग्रंथाः, बहवः स्त्रीणां चोपयुक्ता ग्रंथाः, बृहज्ज्योतिषार्णवनामा बहुविचित्राचित्रितोऽयमपूर्वग्रन्थः संस्कृतभाषया, हिन्दीमार्वाड्यादिभाषाग्रन्थास्तत्तच्छास्त्राद्यर्थानुवादकाः, चित्राणि, पुस्तकमुद्रणोपयोगिन्यो यावत्यस्सामग्र्यः, स्वस्वलौकिकव्यवहारोपयोगिचित्राचित्रिताऽलिखितपत्रवत्पुस्तकानि च;" मुद्रायित्वा प्रकाशन्ते सुलभेन मूल्येन विक्रयाय । येषां यत्राभिरुचिस्तत्तत्पुस्तकाद्युपलब्धये एवं नव्यतया स्वस्वपुस्तकानि समुद्रायिषुभिः सुलभयोग्यमौल्येन सीसकाक्षरैः स्वच्छोत्तमोत्तमपत्रेषु मुद्रिततत्पुस्तकानां स्वस्वसमयानुसारेणोपलब्धये च पत्रिकाद्वारा बोधनीयोऽस्मि ।

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना—कल्याण—मुंबई.

इति नासिकेतोपाख्यानं भाषाटीकासहितं संपूर्णम्